सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
SBI, Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 या ईमेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

नवम्बर, 2018 वर्ष 17 अंक 09

नअ़ते पाक

रब के अन्तिम नबी मुहम्मद जब आए संसार में
नूर रूप वह, पुस्तक लेकर आये इस संसार में
कुफ़्र का यां घुप अंधेरा छाया था हर ओर में
सत्य धर्म का लेके उजाला आए इस संसार में
बात–बात पे लड़ जाते बरसों लड़ा वो करते थे
मेल महब्बत और मिलाप लाए इस संसार में
नारी दासी थी बनी उसकी दशा दयनीय थी
नारी को रानी बनाया आ कर इस संसार में
ला इलाह इल्लल्लाह लोग यां पढ़ने लगे
क़ानून यां चलने लगा कुर्आन का संसार में
होए दया कृपा तेरी या रब नबीये पाक पर
हम पढ़ें उन पर सलाम जब तक रहें संसार में

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

Desining & Editing by: Qamaruzzama- +91 94522 95052
मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
दुरूद व सलाम	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	15
दुरूद व सलाम मन्जूम (पद्य)	इदारा	19
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	17
मुख़्तसर सीरत हबीबे ख़ुदा सल्ल0	मौलाना अब्दुल क़ादिर नदवी	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	27
नई पीढ़ी की सुरक्षा	मौलाना सय्यिद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी	30
आख़िरत की कमाई	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	31
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (पद्य)	इदारा	35
मुस्लिम महिला और हमारा समाज	उबैदुल्लाह मतलूब	36
आमिना का लाल (पद्य)	हाफ़िज़ आ़रिफ़ नदवी	39
बस वंदना रहमान की (पद्य)		40
अहले ख़ैर हज़रात की खिदमत	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-माइदाः

अनुवाद–

झूठ की ओर कान लगाए रखने वाले और मन भर कर ह़राम खाने वाले हैं, बस अगर वे आपके पास आएं तो या आप उनका फ़ैसला कर दीजिए या उनको टाल जाइए और अगर आप उनको टाल जाएंगे तो भी वे आपको हरगिज़ नुक़सान न पहुंचा सकेंगे और अगर आप को फैसला करना है तो इन्साफ़ के साथ फैसला कर दें बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है(42) और वे आप से कैसे फ़ैसले कराते हैं जब कि उनके पास तौरेत मौजूद है जिसमें अल्लाह का आदेश है फिर वे उसके बाद भी मुंह फेरते हैं और वे तो ईमान लाने वाले हैं ही नहीं[1](43) हमने तौरेत उतारी जिसमें हिदायत और रौशनी थी उसके ज़रिए वे पैग़म्बर जो अल्लाह के फ़रमाबरदार (आज्ञाकारी) थे यहूदियों में फ़ैसला करते थे और (इसी तरह) दुरवेश और उलमा भी इसलिए कि उनको अल्लाह की किताब का रक्षक ठहराया गया था और वे इस पर गवाह भी थे तो लोगों से मत डरो और वे इस पर गवाह भी थे तो लोगों से मत डरो और बस मुझ ही से डरो और थोड़ी क़ीमत में मेरी आयतों का सौदा मत करो और जो कोई अल्लाह की उतारी हुई किताब से फ़ैसला न करे तो वे ही हैं इनकार करने वाले(44) और हमने उसमें उनके लिए यह लिख दिया था कि जान के बदले जान है और आँख के बदले आँख और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों में बराबर का बदला है फिर जो उसको माफ़ कर दे तो वह उसके लिए गुनाह का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है और जो कोई अल्लाह के उतारे हुए आदेश के अनुसार फ़ैसला न करे तो वही लोग अत्याचारी हैं[2](45) और हम ने उनके पीछे ईसा पुत्र मरियम को भेजा उन से पहले की किताब तौरेत की पुष्टि (तस्दीक) करते हुए और उनको हमने इंजील (बाइबल) दी जिसमें हिदायत (मार्ग—दर्शन) थी और रौशनी की पुष्टि (तस्दीक़) करने वाली थी और हिदायत और नसीहत (उपदेश) थी कि उसमें अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसके अनुसार ही फ़ैसला करते और जो कोई भी अल्लाह की उतारी हुई चीज़ के अनुसार फ़ैसला नहीं करता तो वही लोग नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं(47) और हमने आप पर भी ठीक ठीक किताब उतार दी जो

पिछली किताबों की पुष्टि भी है और उन पर निगरां (रक्षक)[4] भी तो आप भी जो अल्लाह ने उतारा उसके अनुसार उनके बीच फ़ैसले किया कीजिए और आप के पास जो सत्य आ चुका उसको छोड़ कर उन लोगों की इच्छाओं पर मत चलिए, तुममें से हर एक उम्मत के लिए हमने एक शरीअ़त (क़ानून) बनाई और रास्ता बनाया[5] और अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक उम्मत (समुदाय) बना देता लेकिन वह तुम्हें उस चीज़ में आज़माना चाहता है जो उसने तुम्हें दी हैं बस तुम ख़ूबियों की ओर लपको, तुम सबको अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है फिर जिन चीज़ों मे तुम मतभेद करते रहे हो वह तुम्हें उसकी खबर कर देगा(48) और आप तो उनके बीच जो अल्लाह ने उतारा उसके अनुसार ही फ़ैसला करते रहिए और उनकी इच्छाओं पर मत चलिए और इससे चौकन्ना रहिए कि कहीं वे आप को अल्लाह की उतारी हुई किसी चीज़ से बहका न दें कि अगर वे मुंह मोड़ें तो आप जान लीजिए कि अल्लाह बस यह चाहता है कि उनके कुछ पापों पर उनकी पकड़ करे और बेशक लोगों में अधिकतर तो नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) ही हैं(49) क्या वे जाहिली युग के फ़ैसले चाहते हैं और उन लोगों के लिए अल्लाह से बेहतर फ़ैसला करने वाला कौन हो सकता है जो यक़ीन रखते हैं[6](50)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यानी आश्चर्य की बात है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास फ़ैसला कराने आते हैं और खुद जिसको आसमानी किताब मानते हैं उसके फ़ैसले पर राज़ी नहीं तो वास्तव में उनका ईमान किसी पर नहीं न तौरेत पर न कुर्आन पर, अगली आयतों में तौरेत व इंजील की प्रशंसा की गई है वे कैसी अच्छी किताबें थीं जिनकी इन नालायक़ों ने क़द्र नहीं की और उनको बर्बाद कर दिया, उनकी रक्षा उनके उलमा और संतों (अल्लाह वालों) के ज़िम्मे थी बस कुछ दिन उन्होंने उनसे फ़ैसले लिए फिर धीरे धीरे दूसरे रास्ते पर पड़ गए, बस अल्लाह ने अंतिम और व्यापी व मुकम्मल किताब उतार दी जो उन पिछली किताबों की पुष्टि (तस्दीक़) है और उसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी खुद ली और कह दिया ''व इन्ना लहू ल हाफ़िज़ून'' हम खुद उसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।

2. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत (क़ानून) में भी आदेश थे और हमारी शरअत में भी यही आदेश हैं, उन आदेशों में भी यहूदियों ने मनमानी कर रखी थी, क़बीला ''बनू नज़ीर'' जो सम्मानित थे वे पूरी दियत (अर्थदण्ड) वसूल करते और खुद आधी दियत (अर्थदण्ड) देते, संयोगवश बनू कुरैज़ा के हाथों उनका एक आदमी मारा गया उन्होंने पूरी दियत मांगी, बनू कुरैज़ा ने कहा वे युग बीत गए जब तुम हम पर अत्याचार करते थे अब हज़रत मुहम्मद

शेष पृष्ठ...26 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

आँधी को देख करः-

हज़रत अबू मुंजिर उबै बिन कअब रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आंधी को बुरा न कहो अगर तुम ऐसी आंधी देखो जिस से घबरा जाओ तो यह दुआ पढ़ो, अनुवादः— ऐ अल्लाह हम तुझसे सवाल करते हैं इस हवा की भलाई का और उसकी भलाई का जो उसमें हैं और उसकी भलाई का जिस का इसे हुक्म दिया गया है और हम पनाह मांगते हैं उस हवा की बुराई से और जो बुराई इसमें है और उसकी बुराई से जिसका इसे हुक्म दिया गया है।

(तिर्मिजी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे कि आंधी अल्लाह की रहमत है कभी रहमत ले कर आती है और कभी अज़ाब बन कर आती है जब तुम उसको देखो तो बुरा न कहो बल्कि अल्लाह से उसकी भलाई का सवाल करो और उसके शर्र से पनाह मांगो।

(अबू दाऊद)

हजरत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि जब आंधी आती थी तो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ पढ़ते थे।

अनुवादः— ऐ अल्लाह तुझ से उसकी भलाई और जो उसमें है उसकी भलाई और जिस मक्सद से यह भेजी गयी है उसकी भलाई चाहता हूं, ऐ अल्लाह तुझ से उसकी बुराई और जो उसमें है उसकी बुराई और जिस मक़सद से यह भेजी गयी है उसकी बुराई से पनाह मांगता हूं। (मुस्लिम)

मुर्ग को बुरा कहने की मुमानियतः-

हज़रत जैद बिन खालिद जुहनी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुर्ग मुसलमान को नमाज़ के लिए जगाता है उसको बुरा न कहा करो।

हज़रत जैद बिन खालिद जुहनी से रिवायत है कि हुदैबिया में एक रात, तमाम रात पानी गिरा, सुब्ह को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ाई, जब नमाज़ से फारिग हुए तो हम सब की ओर मुतवज्जेह हो कर फरमाया, तुम जानते हो तुम्हारे रब ने क्या फरमाया, लोगों ने अर्ज किया अल्लाह और उसके रसूल खूब जानते हैं, आपने फरमाया कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि आज सुब्ह के वक़्त मेरे बाज बंदे मेरी कुदरत के मानने वाले हुए और बाज इंकार करने वाले जिन्होंने कहा कि यह बारिश अल्लाह

की रहमत और उसके फज़्ल से हुई तो यह मेरे मोमिन बंदे हैं और यह सितारों के मुंकिर हैं, और जिन्होंने कहा कि नक्षत्र के सबब से बारिश हुई तो वह मेरे मुंकिर हैं और सितारों को मानने वाले हैं।

मुसलमानों को काफिर की उपाधि से पुकारने की मुमानियतः-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई को काफ़िर कह कर पुकारेगा तो उन दोनों में एक पर जरूर कुफ्र लाज़िम हो जायेगा, जिस पर कुफ्र का इलज़ाम लगाया गया है, अगर वह ऐसा है तो उस पर गया वरना कहने वाले पर लौट आयेगा।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू जर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने किसी मुसलमान को काफिर कह कर पुकारा, या अल्लाह का दुशमन कहा और वह ऐसा नहीं है तो कहने वाले ही पर कुफ्र लाज़िम आ जायेगा।

(बुखारी–मुस्लिम)

फुहश और बदगोई की मुमानियतः-

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तअ़न करने वाला, फुहश बकने वाला, लानत करने वाला, बदजुबानी करने वाला मोमिन नहीं है। (तिर्मिजी)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया फुहश जिसमें होता है उसमें ऐब पैदा कर देता है और हया जिसमें होती है उसको संवार देती है। (तिर्मिजी)

तकल्लुफ से बना बना कर बोलने की मुमानियतः-

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मुबालगा (अर्थात किसी बात को बहुत बढ़ा चढ़ा कर बयान करना) करने वाले और तकल्लुफ करने वाले हलाक़ हुए, और यह बात आपने तीन बार दोहराई। (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला उन लोगों से नाराज़ होता है जो बातचीत करते समय गाय की तरह ज़बान को हेर फेर कर बलागत छांटते हैं।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कियामत के दिन मुझे सबसे ज़ियादा महबूब और मेरे बहुत ही करीब होने वाले वह लोग होंगे जिन के अख़्लाक़ बहुत ही अच्छे होंगे और मुझे सबसे ज़ियादा उन लोगों से नफ़रत होगी और मुझ से बहुत ही दूर वही लोग होंगे जो बात चीत करते समय ज़बान को हेर फेर कर गुफ़्तगू करने वाले और बहुत बक बक करने वाले, मुंह भर भर कर बात करने वाले हैं।

(तिर्मिज़ी)

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

दुरूद व सलाम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

दुरूद फ़ारसी शब्द है यह अरबी शब्द सलात का अनुवाद है इसका अर्थ है कृपा, रहमत परन्तु यहां परिभाषा के रूप में प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है अल्लाह तआला से प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए रहमत (कृपा) मांगना, और सलाम अरबी शब्द है हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए सलामती (व्यापक सुरक्षा) मांगना।

पवित्र कुर्आन में है अनुवादः— बेशक अल्लाह और उसके फ़िरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं ''ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरूद भेजा करो और खूब खूब सलाम भेजा करो'' (अल अहज़ाबः 56) भेजा करो अर्थात पढ़ा करो।

आयत में है कि अल्लाह अपने नबी पर दुरूद भेजता है, पीछे आ चुका है कि दुरूद का मतलब है अल्लाह के नबी पर रहमत (दया, कृपा) करने की अल्लाह की प्रार्थना करना परन्तु जब यह शब्द अल्लाह की ओर से बोला जाएगा तो अर्थ होगा अल्लाह तआला अपने नबी पर दया और कृपा करता है। और फिरिश्ते के बीच अपने नबी का प्यार से वर्णन करता है, इस संसार में आप को हर प्रकार का सम्मान देता है। अज़ान में, इक़ामत में, नमाज़ में आपका नाम लाने का आदेश दे कर आप को सम्मानित करता है। रहा फिरिश्तों का दुरूद भेजना तो वह भी हमारी तरह अल्लाह तआला से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर रहमत करने की दुआ मांगते हैं। तमाम ईमान वालों मोमिनों मुसलानों को आदेश है कि वह प्यारे नबी पर अल्लाह से रहमत की दुआ मांगा करें और आप पर अल्लाह तआला से अच्छे ढंग से सलामती (हर प्रकार की सुरक्षा) मांगा करें, अर्थात आप पर ख़ूब सलाम पढ़ा करें।

अल्लाह तआला अपने प्रिय नबी पर रहमत तो हर क्षण उतारता और आप पर सलाम (हर प्रकार की सुरक्षा) हर समय नाज़िल करता है चाहे कोई दुरूद व सलाम पढ़े या न पढ़े परन्तु यह अल्लाह का करम है हम मुसलमानों पर उसकी दया है कि उसने मुसलमानों को सवाब देने के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ने का आदेश दिया है और अपने नबी से कहला दिया कि जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजेगा अल्लाह तआला उस को 10 नेकियां प्रदान करेगा साथ में यह भी कहलवा दिया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम सुने और आप पर दुरूद न पढ़े तो वह कंजूस है अपितु एक रिवायत में उसके लिए बद दुआ (श्राप) आई है कि उसके लिए बड़ी ख़राबी हो उसके लिए जिस के सामने मेरा ज़िक्र आए और वह मुझ

पर दुरूद न भेजे। इसी लिए मसअला है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लो, या सुनो या पढ़ो या लिखो तो दुरूद ज़रूर पढ़ो न पढ़ोगे तो गुनहगार होगे, वाजिब छोड़ने का गुनाह होगा। अगर आप का नामे नामी लिखें तो ज़बान से भी दुरूद पढ़ें और सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखें भी, बाज लोग संकेत में सलअ़म या सल0 लिख देते हैं इस से वाजिब अदा नहीं होता अलबत्ता एक पेज में कई बार नाम आए तो अंत में नाम के साथ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिख देंगे तो वाजिब अदा हो जाएगा लेकिन अच्छा और बड़े सवाब का काम यह है कि हर बार दुरूद लिखा जाए, इसी प्रकार एक मजलिस की गुफ़्तगू में अगर बार बार आप का नाम आए तो आख़िर में सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पढ़ देने से वाजिब अदा हो जाएगा परन्तु बेहतर और बड़ा सवाब इसी में है कि हर बार नाम के साथ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहा जाए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो एहसानात हम पर हैं हम उनका बदल किसी प्रकार न कर पाएंगे, अलबत्ता उसके शुक्रिये में हम खूब दुरूद व सलाम पढ़ा करें और आप की शिक्षाओं को अपनाएं आप की सुन्नतों का आदर करें उनको अपने जीवन का अंग बनाएं, आप से प्रेम रखें ऐसा प्रेम जो अपनी जान, अपने माल, अपनी सन्तान तथा संसार की हर वस्तु से अधिक प्रेम हो। और अल्लाह तआला से प्रेम इस से अधिक हो। अल्लाह तआला ने मोमिनों को दुरूद व सलाम पढ़ने का आदेश दिया साथ ही इसका प्रबन्ध भी कर दिया, पाँच वक़्त की नमाज़ हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है जो नमाज़ पढ़ते हैं वह नमाज़ में दुरूद व सलाम भी पढ़ते हैं, फ़र्ज़ नमाज़ों के अतिरिक्त जो जितनी अधिक नमाज़ें पढ़ेगा उतना ही अधिक वह अल्लाह के नबी पर दुरूद व सलाम भी पढ़ेगा फिर भी बाज रिवायतों से अधिक से अधिक दुरूद पढ़ने की शिक्षा मिलती है अतः हम को चाहिए कि कुछ समय प्रति दिन दुरूद व सालाम पढ़ने के लिए खास करें और उसमें बैठ कर दुरूद पढ़ लिया करें। परन्तु याद रखें नमाज़ों के पश्चात चिल्ला चिल्ला कर सलाम पढ़ना दीन में नई बात निकालना है, अलबत्ता किसी दीनी जलसे या तक़रीब में मंजूम दुरूद व सलाम आवाज़ से पढ़ना अच्छी बात है।

पस दुरूद व सालम पढ़ो, आहिस्ता पढ़ो खूब दिल लगा कर पढ़ो, अल्लाह का बड़ा करम है कि यह बन्दा प्रति दिन कम से कम एक हज़ार दूरूद पढ़ लेता है याद रहे ऐसे दुरूद का विर्द करो जिसमें सलाम भी हो। मैं तो एक छोटा दुरूद इन शब्दों में पढ़ता हूं।

''अल्ला हुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।'' (अल्ला हुम्मा के आख़िरी ''म'' को पृथक ''म'' की तरह पढ़ो)

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

रसूल के आ जाने के बाद इन्कार की गुंजाइश नहीं:–

अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आ जाने के बाद भी हर उस क़ौम की यही हालत है जो ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल के उच्च स्तर तय कर चुकी और उसके अभिमान व घमण्ड और अपने ज्ञान–विज्ञान, विकास तथा विशेषज्ञों पर ज़रूरत से ज़ियादा भरोसे ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े अपनाने और आपके पगचिन्हों पर चलने की इजाजत न दी।

हमारे ज़माने की विकसित क़ौमों का उदाहरण भी यही है, जो क़यामत तक बाकी रहने वाले इस दीन से फायदा उठा सकती हैं और इस ज्योति पुंज से रौशनी की किरनें अपने दामन में समेट सकती हैं। जल्द ही इन क़ौमों के इन्कार, घमण्ड और अपने को सर्वमान्य समझने का नतीजा जाहिर हो जायेगा और इनकी सभ्यता की इमारत ज़मीन पर आ रहेगी।

नबियों का आवाहनः–

नबियों को जब खुली आंखों यह हकीक़त दिख जाती है, कि यह संसार खुदा का बनाया हुआ है, उसी का साम्राज्य है और उसी के हुक्म से यह पूरी व्यवस्था चल हरी है। तो फिर वह इन्सानों की तरफ ध्यान देते हैं और आश्चर्य से देखते हैं कि सृष्टि और उसके तमाम अंग बेबस जिसके सामने सर झुकाये हुए हैं और चाहते हुए या न चाहते हुए जिसकी फरमांबरदारी कर रहे हैं, इन्सान इस सृष्टि के कुल का एक हिस्सा होने के बावजूद उसके सामने अपनी चाहत और इच्छा से झुकने में आना कानी कर रहा है। यद्यपि यह बिना इरादे उसके सामने झुका हुआ है, उसके आदेशों व क़ानून के अधीन है, उसी के हुक्म से पैदा होता है और उसी के हुक्म से पलता बढ़ता है, बच्चा से जवान होता है और जवान से बूढ़ा। उसी की पैदा की हुई चीजों को खाता है, उसी के हुक्म से बीमार होता है, उसी के हुक्म से सेहत (स्वास्थलाभ) पाता है, जीवन की तमाम आवश्यकताओं में और अपने तमाम शारीरिक हालात में खुदा के बनाये हुए कानून और व्यवस्था के उसी प्रकार अधीन है जिस प्रकार पत्थर, जीव–जन्तु। लेकिन जब इससे कहा जाता है कि जिस शक्ति के सामने तू बिना इरादा झुका हुआ है, उसी के सामने अपने इरादे से झुक जाए तो उसको इसमें बहाना होता है। नबियों ने जब पहली हकीक़त के

विपरीत यह घटना देखी और उन्होंने देखा कि उनकी इन्सानी बिरादरी के बहुत से लोगों ने निर्माता के बजाय उसकी कुछ मख़लूक़ात (सृष्टियों) के आगे सर झुकाया है और उनकी इबादत और इताअत (आज्ञापालन) अपना लिया जाता है तो उनकी ज़बान से अनायास निकलाः—

अनुवादः— *क्या यह लोग अल्लाह के दीन के सिवा (किसी और तरीके को) तलाश रहे हैं, हालांकि आसमान व ज़मीन में जो कुछ भी है, इच्छा से हो या मज़बूरी से उसी के अधीन है, और उसी की ओर सबको लौटना है।*

(सूरः आलि—इमरान—83)

कुर्आन में अल्लाह का कहना हैः—

अनुवादः— *और आसमानों और ज़मीन में जितने भी जानदार हैं वे सब अल्लाह ही को सज्दा करते हैं, और फ़रिश्ते भी और ये घमण्ड बिल्कुल नहीं करते।*

अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते हैं, और यह वही करते हैं, जिसका उन्हें हुक्म मिलता रहता है।

(सूरः अंनह्ल 49—50)

अतएव नबियों का आवाहन यह होता है कि इन्सान भी उसी शक्ति के सामने सर झुका दे जिसके सामने सारी सृष्टि सर झुकाये है। सृष्टि का ऐसा अंग हो कर जीवन यापन करे जो अपनी हरकत और अमल में उसी संकलित हरक़त व रफ़्तार से मेल खाती हो और सृष्टि के सृजनहार तथा ज़मीन व आसमानों के मालिक के आदेशों व क़ानून को माने। अपनी तमाम ग़लत इच्छाओं से, इख़्तियार व मनमानी से, आज़ादी व खुदमुख़्तारी (स्वतंत्रता) के दावा से और अपने हुकूक़े मालिकाना (स्वत्वाधिकार) के गर्व से दस्तबरदार हो कर और छुट्टी करके अपने को बिल्कुल उसके हवाले कर दे, इसी का नाम ''इस्लाम'' है जिसकी दावत लेकर तमाम नबी आये। ज़ाहिर है कि इस ''दीन'' और ''इस्लाम'' (पूरी इताअत और पूरी सुपुर्दगी) के बाद और इस विचार के साथ कि अन्ततः फिर वास्ता उसी से पड़ने वाला है, और उसके सामने इस ज़िन्दगी का हिसाब—किताब पेश करना है। इन्सान में मनमानी और खुदमुख़्तारी की भावना किसी तरह पैदा नहीं हो सकती, उसकी ज़िन्दगी का नक्शा उसके दिमाग के सांचे से ढल कर नहीं निकलेगा, बल्कि उसी का प्रस्तावित किया हुआ होगा जिसने सृष्टि का पूरा नक्शा बनाया है और जो खुद इन्सान का भी ख़ालिक़ है, विधाता है। उसका आचरण, उसके क्रिया—कलाप, सियासत व आदेश तथा क़ानून उसके अपने बनाये हुए न होंगे बल्कि उसको सब ख़ुदा की तरफ से मिलेगा।

वह्इ (ईश्वाणी) व रिसालत (दूतता) के इस रास्ते के विपरीत दूसरा रास्ता यह है कि इन्सान अपने को इस संसार में एक ऐसा स्थायी अस्तित्व मान ले जिसके जीवन की दिशा सृष्टि की अन्य वस्तुओं से बिल्कुल जुदा है, और इसमें वह किसी ऊपर वाली ताक़त के अधीनस्थ, किसी आसमानी व्यवस्था का मातहत और

किसी गैर इन्सानी अदालत के सामने उत्तरदायी नहीं है, यह जाहिलियत का रास्ता है। यह वास्तव में खुदा की इस सल्तनत में छोटी–छोटी अनेक आजाद सल्तनतें क़ायम करने की बगावत वाली कोशिश है।

वह्इ (ईश्वाणी) व रिसालत (दूतता) सभ्यता की बुन्याद है:–

नबी अलैहिमुस्सलाम इन्सान को वह अमर ज्ञान और यथार्थ जीवन के वह परिपूर्ण सिद्धान्त और समाज व समूह के वह त्रुटिहीन नियम क़ानून प्रदान करते हैं जिनकी पाबन्दी से सही इन्सानी तहजीब (शुद्ध मानव सभ्यता) अस्तित्व में आती है और जिनकी बुन्याद पर न्यायप्रिय तथा सही सभ्यता का विकास होता है।

संस्कृति ईंट और चूने, कागज़ और कपड़ों की किस्मों का नाम नहीं, न हैवानी ताक़तों को इन्सानी हुनरमन्दी से पूरा करने और इसके लिए एक दूसरे से सहयोग करने का नाम है। संस्कृति उस सामूहिक जीवन का नाम है जिसमें कुदरत क़ायम किये हुए नियम सीमाएं कायम रहें। समूह के प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति की मंशा पूरा करने और ईष्ट लक्ष्य पर पहुंचने में सहायता मिले।

अब हम देखते हैं कि वह्इ (ईश्वाणी) व रिसालत की रौशनी और नबियों के मार्गदर्शन के बिना इन्सान ने जब सामूहिक जीवन का कोई नक्शा बनाया तो कभी वह इसको पूरा न कर सका और उसमें संतुलन न पैदा कर सका जो एक सुधरी इन्सानी सभ्यता की उन्नति के लिए ज़रूरी है।

असल यह है कि खुदा के भेजे हुए पैग़म्बर ख़ुदा की बनाई हुई इस दुन्या के बाग़वान हैं जो इस दुन्या की चमनबन्दी करते रहते हैं और इसके पत्तों टेहनियों को छांटते रहते हैं। जो सभ्यतायें उनकी मदद के बिना उग आईं और उनकी सिंचाई और निगरानी के बिना उग आईं, वह स्वतः उग आये जंगली पेड़ की तरह हैं, इसमें वह तमाम खराबियां होंगी जो जंगल के स्वतः उग आने वाले पेड़ों और झाड़ियों में पाई जाती हैं, सम्भावना यह है कि वह मीठे फल देने वाले छायादार पेड़ के बजाय कड़वे या कसैले फल देने वाला कांटेदार पेड़ ही होगा।

नबी प्रकृति के नब्ज़ देखने वाले और इन्सानियत के प्रवृत्ति को जानने वाले डाक्टर हैं जिस सभ्यता का ख़मीर अंबिया की तरकीब और उनकी सलाह के बिना तैयार हो उसमें कभी संतुलन नहीं हो सकता। उसके मिजाज़ का असंतुलन कभी न जायेगा। ऐसी सभ्यता जितनी उन्नति करेगी उसकी छिपी हुई खराबियां जो उसकी फितरत में दाख़िल हैं उतनी ही उभरती जायेंगी। इसलिए हम देखते हैं कि दुन्या की तमाम विख्यात ऐतिहासिक सभ्यताओं के उत्थान का ज़माना सबसे ज़ियादा सामूहिक और चरित्रक ख़राबियों का ज़माना रहा है जिस में सामूहिक व्यवस्था के आन्तरिक अवगुण और असमानता

धरातल पर उभर आती हैं। तमाम मानव सभ्यताओं के उत्थान के इसी दौर में पति–पत्नी के सम्बन्धों की ख़राबी, घरेलू जीवन की ख़राबी, वर्ग–भेद, नैतिक बीमारियां तथा सामूहिक अव्यवस्था सबसे अधिक बढ़ जाती हैं और उस सभ्यता की समाप्ति का समय करीब हो जाता है, मानो उसके उत्थान और उसकी बर्बादी का ज़माना एक ही होता है।

बहुत से लोग हक़ीक़त से वाकिफ़ नहीं हैं कि अक़ायद (विश्वास) सभ्यता की मज़बूत बुन्याद है। जिस सभ्यता की बुन्याद ऐसी बातों पर न हो जो सर्वमान्य हों और यथार्थ हों, वह सभ्यता बेबुन्याद और बच्चों का खिलौना है। वह्इ (ईश्वाणी) और रिसालत ही सही आस्था प्रदान करते हैं। फिर उसको स्थिरता व मजबूती देते हैं इन्हीं के द्वारा इन्सान को आचरण और सम्मेलन के लिए ऐसी आधारभूत सर्वमान्य बातें प्राप्त होती हैं जो आसमान व ज़मीन की तरह पायदार और पहाड़ों की तरह स्थिर होती हैं। उन्हीं की बुन्याद पर सभ्यता व संस्कृति की पूरी इमारत खड़ी होती है। आचरण व समूह व समाज में वही बुन्याद का काम देते हैं। जब किसी क़ौम के हाथ से वह्इ व रिसालत का रिश्ता टूट जाता है, या शुरू से ही अंबिया का दामन उसके हाथ नहीं आता तो फिर उसके नज़दीक़ हक़ीक़त, हक़ीक़त नहीं रहती। स्वतः स्पष्ट बातें, दृष्टिकोण (नज़रियात) बन जाते हैं, उसकी सामूहिक आइडियालोजी, दिन–रात, सुबह–शाम बदलती रहती है। ज्ञानमयी यथार्थ बदलते रहते हैं। नैतिक शब्दावलियों में परिवर्तन होता रहता है और नैतिक दर्शन शास्त्र निरस्त होते रहते हैं। अच्छाई, बुराई, नेकी व फसाद का कोई स्तर बाक़ी नहीं रहता। कल जो चीज़ शिष्टाचार थी आज वह अशिष्टाता गिनी जाती है। आज जिस का नाम अत्याचार है कल न्याय बन जाता है। चीज़ों की हक़क़त के फर्क से जेहन अपरिचित हो जाते हैं। उस समय उस क़ौम का मूल बिगड़ जाता है। उसकी नैतिक अनुभूति झूठ हो जाती है। आज़ादी के पर्दे में विचारों का घोर बिखराब और कर्म का विरोध पैदा होता है। अन्ततः उसमें वह अनारकी (अराजकता) और नैतिक इन्कार की प्रवृत्ति जन्म लेती है जो उस क़ौम का जीना दूभर कर देती है और स्वयं उसकी बनाई हुई धरती की जन्नत को उसके लिए जहन्नम और उसकी दुन्या की दूसरी क़ौमों और सभ्यताओं के लिए प्लेग की महामारी बना देती है।

तमाम मानव संस्कृतियों और सभ्यताओं का इतिहास पढ़ जाइये। उनके सामूहिक और नैतिक रोगों और अन्ततः उसकी तबाही का असल कारण धार्मिक व नैतिक विश्वास व नजरियात

शेष पृष्ठ....29 पर

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी —अनुवादः अतहर हुसैन

दूसरे ख़लीफा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 का शासन काल

आलोचना की छूटः—

आप शासन काल का जो आदर्श क़ायम करना चाहते थे उसमें बाध्य आज्ञापालन की कोई गुंजाइश न थी। आपकी दृष्टि में ऐसे निरंकुश शासन का कोई अर्थ ही न था जिसमें उनके सामने कोई दम न मार सके और हर उचित अनुचित आदेश के सामने सिर झुका दे बल्कि आपकी इच्छा थी कि लोग स्वतंत्रतापूर्वक समस्याओं पर विचार करें और शासक की बातें सुनें, और उन पर ग़ौर करें। यदि कोई बात आपत्तिजनक दिखाई पड़े तो उसका खण्डन करें। उन्हें अधिकार है कि शासक के वक्तव्य पर विचार करते रहें अगर उसे विधान का उल्लंघन करते हुए अनुभव करें या उसका कोई आचरण अनुचित मालूम हो तो उसके बारे में निर्भय हो कर प्रश्न करें और जब तक संतुष्ट न हो जायें चुप न बैठें।

आप कहा करते थे कि अरबों की मिसाल ऊँट की तरह है, अगर ज़ियादा ढील दी जाये तो क़ाबू से बाहर हो जाता है। अगर नकेल कस दी जाये तो विवश हो कर सिर झुका देता है और रस्सी पकड़ कर जिधर चाहो मुंह उठाए चला जाता है। आप चाहते थे कि लोग न तो अपने को तुच्छ समझते हुए शासकों के आगे सिर टेक दें और न चाहते थे कि बेनकेल के ऊँट बन जायें। यही सिद्धान्त आपकी राजनीति का आधार था। आप चाहते थे कि लोग सत्यमार्ग से विचलित न होने पायें। दब कर नहीं बल्कि समझ कर। आपने अपनी इस विचारधारा को लोगों के दिलों में उतार दिया था। आप उनके अन्दर स्वतंत्रता पूर्वक विचार और अपना मत निर्भय हो कर प्रकट करने की भावना को उजागर करने का निरन्तर प्रयास करते रहते थे। आपकी ओर से यह आम ऐलान था कि ‘‘ऐ लोगो! मुझ पर तुम्हारे कई अधिकार हैं जिस पर तुम्हें मेरी पकड़ करनी चाहिए। मेरा कर्तव्य है कि मैं तुम्हारे ख़िराज (राजस्व कर) और माले—ग़नीमत को अनुचित साधनों से न हासिल करूं और यदि यह आय मेरे हाथ में आ जाये तो उसे अनुचित ढंग से व्यय न करूं। तुम्हें देने में हाथ न रोकूं, तुम्हारी सीमाओं की रक्षा करूं और तुम्हें संकट में न डालूं।

केवल यही एक ऐलान न था, आप साधारण लोगों को इस बात का ध्यान दिलाते रहते थे कि वह उनके कामों की देख—रेख करते रहें और अगर कोई बात अनुचित दिखायी दे तो बेधड़क उनको टोक दें। एक बार व्याख्यान के बीच उन्होंने पूछा कि अगर मैं टेढ़ा हो जाऊँ तो तुम क्या

करोगे? समूह से आवाज़ आई कि अगर तुम टेढ़े हो जाओगे तो हम तुम्हें सीधा कर देंगे। इस उत्तर से आप बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि ख़ुदा का शुक्र है कि अभी क़ौम में ऐसे लोग मौजूद हैं जो उमर को सीधा कर सकते हैं।

इस प्रोत्साहन ने लोगों में संप्रेक्षण और सत्य को निर्भीकतापूर्वक प्रकट कर देने का साहस पैदा कर दिया था। एक बार भाषण दे रहे थे, उसी बीच आपने कहा ''लोगो! सुनो और मानो'' एक कोने से एक देहाती उठा और उसने कहा ''उस समय तक हम इस आदेश का पालन न करेंगे जब तक कि आप हमें यह न बताएं कि आपका इतना लम्बा कुर्ता कैसे बन गया जबकि माले–ग़नीमत में जो चादर बटी थी वह इतनी बड़ी न थी कि आपके जैसे आदमी का कुर्ता उसमें बन सकता। फिर आख़िर इतना लम्बा कुर्ता कैसे बन गया?'' आप ने अपने सुपुत्र अब्दुल्लाह रज़ि0 की ओर संकेत किया कि इस एतराज़ का उत्तर दें। वह खड़े हुए और कहा मैंने अपने हिस्से की चादर भी अमीरुल– मोमिनीन को दे दी थी इस तरह मेरी और उनकी दो चादरें मिला कर यह कुर्ता बना है।'' इस स्पष्टीकरण के बाद वह आदमी बैठ गया और बोला ''कहिए, अब हम आपकी बात सुनेंगे और आपका कहना मानेंगे।''

एक बार आप महर की कमी पर ज़ोर दे रहे थे, एक स्त्री ने तुरन्त ही टोक दिया और कहा, यह बात कुर्आन मजीद की व्यापकता के विरुद्ध है। कुर्आन शरीफ़ में महर के लिए क़िन्तार (ढेरों माल) का शब्द आया है। उस औरत का अभिप्राय यह था कि महर, पति तथा पत्नी की पारस्परिक स्वीकृति से तय होता है। पति अपनी हैसियत के अनुसार जितनी भी राशि अदा करने का इक़रार करे वह वैध है। महर स्त्री का अधिकार है। महर में कमी को संवैधानिक रूप देना स्त्री वर्ग के साथ अन्याय है। हज़रत उमर रज़ि0 ने उस औरत के एतराज़ को स्वीकार किया और उसके साहस पर बहुत खुश हुए और तत्काल कहा ''औरत की राय सही है, उमर से ग़लती हुई।''

एक मर्तबा एक व्यक्ति ने कई बार कहा, ''ऐ उमर! अल्लाह से डरो।'' उपस्थित जनों में से एक ने उसे रोकने का प्रयत्न किया, लेकिन आपने उसे रोकने नहीं दिया और कहा कि कहने दो। इन्हें कहना, और हमें सुनना चाहिए, अगर यह न कहें तो इनका अस्तित्व बेकार है और अगर हम न सुनें तो हमारा वजूद व्यर्थ है।

राज प्रबन्ध के समस्त कार्य सर्वसम्मति से करते। कहा करते थे कि जिस मामले में परामर्श न किया जाये उसमें भलाई नहीं हो सकती।

गुलामों के साथ व्यवहारः–

उस युग में इस धरती पर गुलामों की कोई हैसियत न थी। समाज में उनका स्थान पशुओं से बदतर था, लेकिन फ़ारूक़ आज़म रज़ि0 के सामने इस्लाम के आदेश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत (तरीक़ा) थी। आप संसार से गुलामों की कठिनाइयां दूर करने केलिए प्रयत्नशील थे। आप चाहते थे कि अधिक से अधिक गुलाम आज़ाद किये जायें। इसके लिए जहां तक हो सकता आप प्रयत्न करते। इसके साथ गुलामों के मालिकों को आदेश था कि जब तक गुलाम आज़ाद न हों उनके साथ सद्व्यवहार किया जाये। जो ख़ुद खाएं वह उन्हें खिलाएं जो खुद पहनें, वह उन्हें पहनायें, यहां तक कि बैतुलमाल से जब वज़ीफ़े मुक़र्रर किए जाते थे तो गुलामों के लिए भी वही तन्ख़्वाह निर्धारित करते जो उनके मालिकों की होती।

स्वयं अपने आचरण द्वारा गुलामों के साथ समानता का उदाहरण प्रस्तुत किया करते थे। एक बार आप थके–मांदे आ रहे थे, इत्तिफ़ाक़ से एक गुलाम गधे पर सवार आपके क़रीब से गुज़रा। आपने इच्छा प्रकट की कि वह आपको अपनी सवारी पर बिठा ले। यह सुन कर वह सवारी से उतर पड़ा और आपसे बैठने की प्रार्थना की, परन्तु आप ने कहा, यह नहीं हो सकता कि मैं सवार हो कर चलूं और तुम्हें पैदल चलना पड़े। तुम्हारी यह कृपा होगी यदि मुझे भी अपने साथ थोड़ी सी जगह दे दो। गुलाम ने बहुतेरा चाहा कि आप अकेले सवार हो कर चलें और वह पैदल चले। लेकिन आपने एक न मानी और उसे साथ बैठने पर मज़बूर किया। वह आज्ञापालन हेतु सवारी पर बैठने के लिए तैयार हो तो गया परन्तु इस अवसर पर उसने फिर प्रार्थना की कि आप आराम से आगे बैठें, मैं पीछे बैठ जाऊँगा। लेकिन आपके दिमाग़ में समानता तथा मानव अधिकार का उच्चतम आदर्श विद्यमान था इसकी वजह से आप किसी तरह इस बात पर तैयार न हुए कि आगे बैठें। गुलाम ने आग्रह किया परन्तु आप किसी तरह आमादा न हुए। आख़िरकार मज़बूर हो कर गुलाम आगे बैठा आप उसके पीछे बैठे और इसी दशा में मदीना मुनव्वरा आए।

गुलामों को अपने साथ दस्तरख़्वान पर बिठा कर भोजन कराते और कहा करते थे कि उन लोगों पर ख़ुदा की लानत हो जो गुलामों को अपने साथ खाने में शरीक़ करने को बुरा समझते हैं।

सेवकों से सेवा न करा कर स्वयं करते थेः–

बैतुलमाल के ऊँटों की देखभाल पर बहुत ध्यान देते थे। अगर किसी ऊँट को खुजली हो जाती तो स्वयं अपने हाथ से उसके तेल मलते, लोग देखते तो आपकी दशा पर तरस खाते और प्रार्थना करते कि अमीरुल–मोमिनीन आप इतना कष्ट न उठाएं। किसी सेवक को आज्ञा दें कि वह तेल मल

दे। लेकिन आप उत्तर देते कि मुझ से बढ़ कर खुदा का गुलाम और कौन होगा। मुसलमानों का शासक उनका सेवक होता है।

आपका यह आचरण ''सैय्यदुल–क़ौमि–ख़ादिमुहुम'' (क़ौम का सरदार उनका ख़ादिम होता है) की क्रियात्मक व्याख्या थी।

अपने प्रदिद्वन्द्वी का लिहाज़ः–

आप बराबरी के सिलसिले में अपने पराये का कोई अन्तर न था। एक बार किसी व्यक्ति ने आप पर दावा किया मुक़दमा हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 के सिपुर्द था। उन्होंने आपको मुक़दमे की इत्तिला दी और न्यायालय में अपनी सफ़ाई पेश करने का आदेश दिया। क़ाज़ी के आदेश पर आपने अपने को तुरन्त अदालत में पेश किया, जब आप अदालत के कमरे में पहुंचे, तो क़ाज़ी हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 आपके सम्मान हेतु उठ खड़े हुए और आपके लिए जगह ख़ाली की। लेकिन हज़रत उ़मर रज़ि0 ने उनके इस व्यवहार को बहुत नापसन्द किया और कहा कि मुक़दमे के दौरान क़ाज़ी की दृष्टि में वादी तथा प्रतिवादी दोनों की हैसियत बराबर होनी चाहिए। आपने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 को सम्बोधित करते हुए कहा– कि इस मुक़दमें में तुम्हारी ओर से यह पहला अन्याय है, यह कह कर मुद्दई के निकट बैठ गए।

राजकर्मचारियों पर समानता के आचरण का प्रभावः–

आपके पवित्र आचरण, समानता–भाव, त्याग, तपस्या तथा संयम का प्रभाव राज–कर्मचारियों पर बहुत था। संसार के इतिहास में ऐसे शासक और अधिकारी मुश्किल ही से कहीं मिलेंगे जो फ़ारूक़ आज़म के ओहदेदारों और हाकिम के पासंग को भी पहुंच सकें।

हज़रत अबू उबैदः बिन जर्राह रज़ि0 फ़रूक़ी–शासन काल के प्रसिद्ध सेनापति थे। एक बार की घटना है कि विजित प्रदेशों के कुछ रईसों ने आपकी दावत की और उत्तम स्वादिष्ट तथा मूल्यवान खाने और हलवे तैयार कराके आपकी सेवा में प्रस्तुत किए। भोजन आरम्भ करने से पूर्व आपने लोगों से पूछा कि क्या आप लोगों ने समस्त सैनिकों के लिए ऐसे ही उत्तम तथा स्वादिष्ट भोजन तैयार करवाये हैं? उन लोगों ने उत्तर दिया ''नहीं, यह तो केवल आपके लिए ही तैयार कराया है।'' यह सुन कर हजरत अबू उबैदः रज़ि0 ने दावत अस्वीकार कर दी और बोले ''मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। अबू उबैदाः रज़ि0 बहुत ही बुरा व्यक्ति होगा यदि वह उन लोगों को छोड़ कर, जो रक्त बहाने में उसके साथ हैं, कोई भी वस्तु विशेष अपने लिए ग्रहण करे। ख़ुदा की क़सम अबू उबैदः रज़ि0 उन वस्तुओं में जो ख़ुदा ने समस्त मुसलमानों को दी है, वही खा सकता है, जो सब मुसलमान खा सकें।''

❖❖❖

दुरूद व सलाम मन्जूम —इदारा

ख़ातिमुल अंबिया ख़ातिमुल मुरसलीं
अशरफुल अंबिया सय्यिदुल मुरसलीं
रहमते आलमीं शाफिए मुज़नबीं
इस जहां में जो हैं आप तैबा मकीं
वो हैं ख़ैरुल बशर और ख़ैरुल अनाम
उन पे लाखों दूरूद उन पे लाखों सलाम
जिस ने मेराज में रब से की गुफ्तुगू
वां का किस्सा बयां कर दिया हू बहू
जिस को उम्मत की वां भी रही जुस्तुजू
ऐसा मुशफिक़ जहां ने न देखा कभू
वह हैं खैरुल बशर और खैरुल अनाम
उन पे लाखों दूरूद उन पे लाखों सलाम
तुहफा मेराज का पंजगाना नमाज़
हो अदा दिल से बस वालिहाना नमाज़
बस पढ़ो फर्ज़ो नफ्ल आबिदाना नमाज़
उस में युस्र में ज़ाहिदाना नमाज़
जिन की आंखों की ठण्डक बनी यह नमाज़
उन पे लाखों दूरूद उन पे लाखों सलाम
जिन से ईमान हम को मिला या खुदा
जिन के सदक़े में हम पर है रहमत सदा
उनके दर पे यह कहता है बन्दा तेरा
आप खैरुल बशर आप खैरुल अनाम
रहमतें आप पर और लाखों सलाम
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

❖❖❖

मुख़्तसर सीरत हबीबे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

—मौलाना अब्दुल क़ादिर नदवी

विलादत व नसब नामाः–

विलादत व नसबः– अबुलक़ासिम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन शैबा या आमिर, अब्दुल मुत्तलिब बिन अम्र, बिन हाशिम बिन अब्द शम्स, अब्द मनाफ बिन कुसै बिन केलाब बिन मुर्रह बिन काब, बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फिहेर बिन मालिक बिन अन्नज्र बिन कनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इल्यिास बिन मुज़्र बिर नज़ार बिन मअ़द बिन अदनान।

अन्नज्र को कुरैश कहा गया है और उनकी औलाद को कुरैशी कहा गया।

वालिदा मोहतरमाः– आमिना बिन्ते वहब बिन अब्द मनाफ बिन ज़ोहरा बिन केलाब बिन मुर्रह।

विलादत बासआदतः–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश पीर के दिन 9 रबीउल अव्वल आमुलफील में हुई। और फील का वाक़िया 13 मोहर्रम को पेश आया था। इसकन्दरी साल के मुताबिक़ 882 या 820 के अप्रैल में 20 तारीख को और ईसवी के ऐतबार से 22 अप्रैल 571 ई0 को। बिकरमी साल के ऐतबार से यकुम जेठ 628 को हुई।

वालिदे मोहतरम की वफातः–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी शिकमे मादर ही में थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद इस दारेफानी से कूच कर गए।

वालिदा माजिदा की वफातः–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र अभी 6 साल थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा भी मुक़ामे अबवा में (जो मक्का और मदीना के दरमियान वाक़े है) रेहलत फरमा गईं।

आप सल्ल0 की रज़ाई माऐंः–

कुछ दिन आप सल्ल0 को अबू लहब की बांदी सौबिया ने दूध पिलाया सौबिया ने इससे पहले आप सल्ल0 के चचा हज़रत हमज़ा और अबू सलमा बिन अब्दुल असद को भी दूध पिलाया था, चुनांचे इस ऐतबार से ये दोनों आप सल्ल0 के रज़ाई भाई भी हुए। फिर आप सल्ल0 को हलीमा बिन्ते अबू जुऐब अब्दुल्लाह बिन अलहारिस ने दूध पिलाया। हलीमा अलहारिस बिन अब्दुल अज़ीज़ की ज़ौजियत में थीं। आपका अब्दुल्लाह नामी एक लड़का था और शीमा नामी एक लड़की थी जो कि आप सल्ल0 को गोद में खेलाया करती थी।

वालिदा की गोद में वापसीः–

हलीमा सादिया रज़ि0 ने आप सल्ल0 को दो साल और दो महीने के बाद वापस कर दिया एक क़ौल के मुताबिक़ 5 साल के बाद लौटाया। जब आप सल्ल0 की वालिदा का इन्तिक़ाल हुआ तो आप सल्ल0 के

दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप सल्ल0 को आग़ोशे तरबियत में लिया जब आपकी भी वफात का वक़्त करीब आया तो अपने बेटे अबू तालिब को किफालत की वसीयत की। इस वक़्त आप सल्ल0 की उम्र तक़रीबन 8 साल थी।

चचा अबू तालिब की परवरिश में :-

हज़रत अबूतालिब ने आप सल्ल0 को आग़ोश तरबियत में लिया और अच्छी तरबियत की यहां तक कि आप सल्ल0 अपनी उम्र के 15वीं साल को पहुंचे। फिर आप सल्ल0 मुस्तक़िल तौर पर अलग रहने लगे।

क़बीला बनू हाशिम में आप सल्ल0 की वजाहत और इम्तियाज़ी शान होने की वजह से हज़रत अबू तालिब आप सल्ल0 को खूब चाहते थे लिहाज़ा जब अबू तालिब शाम तिजारत के लिए निकले तो आप सल्ल0 को भी साथ ले गए उस वक़्त आप सल्ल0 की उम्र 13 साल थी दौराने सफर बुहैरा राहिब ने आप सल्ल0 को देखा और अलामाते नबूव्वत से आप सल्ल0 को पहचान लिया और हज़रत अबू तालिब को क़सम दिलाई यहां तक उन्होंने आप सल्ल0 को लौटा दिया।

शाम का सफरः-

जब आप सल्ल0 की उम्रे मुबारक 25 साल की हुई तो हज़रत खदीज़ा रज़ि0 की तिजारत के लिए शाम का सफर किया और आप सल्ल0 बसरा पहुंचे फिर मक्का लौट आए और दो महीना के बाद हज़रत खदीजा रज़ि0 से शादी की।

खान-ए-काबा की तामीरः-

जब आप सल्ल0 35 साल के हुए तो काबा की जदीद तामीर में शिरकत फरमाई और कुरैशे मक्का निज़ाए हजरे असवद में आप सल्ल0 के फैसल से राज़ी हो गए क्योंकि ये लोग आप सल्ल0 को अमीन कह कर पुकारते थे।

बे असतः-

जब आप सल्ल0 40 साल के हुए तो आप सल्ल0 पर वही नाज़िल की गई, ये वाकिया सही क़ौल के मुताबिक़ बरोज़ पीर 3 रबीउलअव्वल 922 इसकन्दरी में ज़ुहूर पज़ीर हुआ। 3 साल तक खुफिया तौर पर इस्लाम की तबलीग़ करते रहे, फिर जिबराईल अलैहिस्सलाम आए और ऐलानिया पैग़ाम नबूव्वत पहुंचाने का हुक्म दिया और जिबराईल के वास्ते से आप सल्ल0 पर कुर्आन नाज़िल हुआ। फिर आप सल्ल0 ने लोगों को दावते हक़ दी और साबिक़ीने अव्वलीन हज़रत अली रज़ि0 हज़रत अबू बक्र रज़ि0, हज़रत उस्मान रज़ि0, हज़रत सअद रज़ि0 ने आप सल्ल0 की दावत पर लब्बैक कहा लेकिन मुशरिकीन ने आप सल्ल0 की मुख़ालिफ़त की और आप सल्ल0 के दुश्मन हो गए, चचा अबू तालिब ने आप सल्ल0 की हिमायत की और आप सल्ल0 को अपनी पनाह में रखा तो कुरैश बनू हाशिम के खिलाफ मुत्तहिद हो गए और उनको एक वादी में क़ैद कर दिया, ये वाक़िया

बेअसत के 6 साल बाद हुआ, क़बील–ए–बनू हाशिम 3 साल तक इस वादी में महसूर रहे आमुलफील के 50वें साल के शुरुअ में इससे नजात मिली इसके 6 महीने बाद हज़रत अबू तालिब की वफात हो गई और इसके तक़रीबन 3 या 4 दिन बाद हज़रत खदीजा रज़ि0 भी इस दारे फानी से कूच कर गईं। फिर आप सल्ल0 ताएफ गए वहां भी कोई अच्छी तवक़्को क़ायम नहीं हुई तो आप सल्ल0 मुअ़तम बिन अदी की पनाह में मक्का वापस आए इस वक़्त आप सल्ल0 की उम्र 51 साल थी। इसी साल नसीबैन के जिन ईमान लाए और इसी साल मेराज का वाक़िया पेश आया।

हिजरतः–

फिर जब आप सल्ल0 की उम्र 53 साल की हुई उस वक़्त आप सल्ल0 को हिजरते मदीना की इजाज़त मिली इससे पहले मुसलमानों की एक जमाअत हब्शा और मदीना की तरफ हिजरत कर चुकी थी जिनमें हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 भी थे।

हिजरत के मौक़े पर हजरत अली रज़ि0 को अहले मक्का की अमानतें लौटाने के लिए मुकर्रर फरमाया फिर हज़रत अली रज़ि0 भी हुजूर सल्ल0 से जा मिले हुजूर सल्ल0 बारह रबीउल अव्वल को मक़ामे क़बा पहुंचे और बनू अम्र बिन औफ़ के यहां 10–15 दिन क़याम फरमाया और एक मस्जिद (मस्जिद तक़्वा) की बुन्याद डाली फिर मदीना तशरीफ ले गए और अबू अय्यूब रज़ि0 के यहां क़याम फरमाया यहां तक कि मस्जिदे नबवी और हुजरात की तामीर मुकम्मल हो गई तो वहां मुन्तक़िल हो गए।

उम्महातुल मोमिनीनः–

(1) खीदजा बिन खुवैलिद बिन असद। हज़रत खदीजा की सबसे पहले अबू हाला से शादी हुई उनसे आप के हिन्द और हाला दो लड़के थे। उसके बाद अतीक़ बिन आएज़ से शादी हुई उनसे एक लड़की हुई जिसका नाम हिन्द था। फिर हुजूर सल्ल0 ने आपको शरफे ज़ौजियत बख्शा उस वक़्त हज़रत खदीजा की उम्र 40 साल थी। हुजूर सल्ल0 की तमाम औलाद सिवाए हज़रत इब्राहीम रज़ि0 के उन्हीं से थीं। सही क़ौल के मुताबिक़ हिजरत के तीन साल क़ब्ल इन्तिक़ाल हुआ, अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ आप 25 साल रहीं।

(2) हज़रत खदीजा रज़ि0 की वफात के बाद आप सल्ल0 ने हज़रत सौदा बिन्ते ज़मआ से शादी की जो शुरु ही में इस्लाम ले आईं थी और सुकरान बिन अम्र के निकाह में थीं, सुकरान बिन अम्र इस्लाम की दौलत से मालामाल थे। और हब्शा की तरफ हिजरत भी की थी। इनकी वफात के बाद आप सल्ल0 की ज़ौजियत में आईं और हज़रत आयशा रज़ि0 से निकाह से पहले मक्का में रुखसती हुई, जब आप की उम्र दराज़ हुई तो अपनी बारी हज़रत आयशा रज़ि0

को दे दी सन् 54 हिजरी में मदीना में वफ़ात हुई।

(3) फिर माहे शव्वाल में हज़रत आयशा रज़ि0 से शादी हुई सन् 2 हिजरी में आप रज़ि0 की रुख़्सती हुई, उस वक़्त हज़रत आयशा की उम्र 9 साल थी। हुजूर सल्ल0 की इनके अलावा किसी और कुंवारी खातून से शादी नहीं हुई। 17 रमज़ान सन् 58 हिजरी हज़रत अमीर मुआविया रज़ि0 के दौर में इन्तिक़ाल हुआ।

(4) फिर हिजरी 2 या 3 में हज़रत हफ्सा रज़ि0 आप सल्ल0 की ज़ौजियत में आईं, इससे पहले वो हज़रत खुनैस के निकाह में थीं, और उन्हीं के साथ हिजरत भी की थीं, गज़व–ए–बद्र के बाद हज़रत खुनैस रज़ि0 का इन्तिक़ाल हुआ।

(5) इसके बाद आप सल्ल0 की शादी ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा बिन हारिस से सन् 3 हिजरी में हुई, इससे पहले वो अब्दुल्लाह बिन जहश के निकाह में थीं, जिन्होंने ग़ज़वए ओहद में शहादत पाई, हज़रत ज़ैनब रज़ि0 आप सल्ल0 के निकाह में आने के 2 या 3 महीने के बाद ही हिजरत के चौथे साल वफात पा गईं। और ये भी कहा गया है कि ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा हुजूर सल्ल0 की ज़ौजा उम्मुलमोमिनीन मैनूना की हमशीरा थीं।

(6) फिर हिन्द बिन्त अबू उमैय्या आप सल्ल0 के निकाह में आईं। जो इससे पहले अबू सलमा बिन अब्दुल असद के निकाह में थीं। अबू सलमा रज़ि0 की सन् 3 या 4 हिजरी में वफात हो गई, इसी साल माहे शव्वाल में हुजूर सल्ल0 ने उनसे शादी कर ली। सन् 59 हिजरी में वफात हुई, उस वक़्त आप की उम्र 84 साल थी।

(7) सन् 3 हिजरी में ज़ैनब बिन्ते जहश आप सल्ल0 के निकाह में आईं, जो उस वक़्त से पहले हुजूर सल्ल0 के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि0 के अक़्द में थीं हज़रत ज़ैद रज़ि0 ने उनको तलाक़ दे दी थी सन् 20 हिजरी में उनकी वफात हो गई।

(8) फिर उम्मे हबीबा रमला बिन्त अबू सुफियान आप सल्ल0 की ज़ौजियत में आईं, इससे पहले वो अब्दुल्लाह बिन जहश के निकाह में थीं जिनसे उनकी हबीबा नामी एक लड़की हुई थी, अब्दुल्लाह उम्मे हबीबा रज़ि0 को हब्शा की हिजरत में अपने साथ ले गए और फिर वहां पहुंच कर नसरानी हो गए और वहीं इन्तिक़ाल हुआ तो शाह हब्शा ने हुजूर सल्ल0 से उनकी शादी कर दी, उसके अलावा भी दीगर अक़्वाल हैं। सन् 44 हिजरी में उनका इन्तिक़ाल हुआ।

(9) फिर जुवैरिया बिन्ते हारिस को शरफे ज़ौजियत बख्शा जो दरअसल ग़ज़व–ए–मुरैसीअ सन् 6 हिजरी में बांदी बन कर आई थीं। आपकी वफात सन् 56 हिजरी में हुई।

(10) उसके बाद मैमूना बिन्त हारिस बिन हज़्न मुशर्रफ ब ज़ौजियत हुईं, जिनकी वालिदा हिन्द बिन्त

औफ थीं, इससे क़ब्ल वो मसऊद बिन अम्र सक़फी के निकाह में थीं, उन्होंने उनको तलाक़ दे दी तो उनसे अबू रहम बिन अब्दुल्ल उज़्ज़ा ने शादी कर ली और जब उनकी भी वफ़ात हो गई तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ज़ीक़ाएदा सन् 7 हिजरी उमरतुलक़ज़ा के दरमियान मक़ाम ''सर्फ'' में उनसे शादी की, तक़दीरे इलाही देखिए कि जिस जगह शादी हुई उसी जगह सन् 61 हिजरी में इन्तिक़ाल हुआ, मैमूना बिन्त हारिस हज़रत अब्बास की अहलिया उम्मे फज़्ल और असमा बिन्त उमैस की अख्याफी बहन थीं। ये अल्लाह के रसूल सल्ल0 की आखिरी ज़ौजए मुबारका हैं। कहा जाता है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उसके बाद शादी नहीं की। इनसे इब्ने अब्बास, अब्नुअस्म, इब्ने शद्दाद, कुरैज़ और अता ने अहादीस रिवायत की हैं।

(11) फिर सफिया बिन्त हुय्य आप की ज़ौजियत में आईं, जिनका तअल्लुक़ हज़रत हारून अलै0 के खानदान से था इससे पहले कनाना बिन अबुल हक़ीक़ के निकाह में थीं, मनाना गज़व–ए–ख़ैबर सन् 7 हिजरी में क़त्ल कर दिए गए और इसी गज़वा में हज़रत सफिया को क़ैद कर दिया गया। हुजूर सल्ल0 ने उनको अपने लिए पसन्द फरमाया और महर के एवज़ में आप सल्ल0 ने उनको आज़ाद कर दिया सन् 55 हिजरी में विसाल हुआ।

इसके अलावा और भी खवातीन से निकाह का तज़किरा मोअर्रखीन ने किया है लेकिन वो मुत्तफक़ अलैह नहीं हैं। अलबत्ता आप सल्ल0 की कुछ बांदियां ज़रूर थीं जिनमें से मारिया बिन्त शमऊन शाह मक़ूकस की तरफ से हदिया में आईं थीं, खास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं क्योंकि उनसे आप के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम की विलादत हुई, उनका सन् 16 हिजरी में इन्तिक़ाल हुआ।

(इस मज़मून की तफ़सील अस्ल किताब में मुलाहिज़ा फरमाएं)

हुजूर सल्ल0 की औलाद–

बेटेः–

(1) सबसे पहले साहबज़ादे हज़रत क़ासिम हैं जो दो साल ज़िन्दा रहे और ज़मान–ए–जाहिलिय्यत में नजूले वही से क़ब्ल इन्तिक़ाल फरमा गए।

(2) अब्दुल्लाह– उनको ताहिर भी कहा जाता है।

(3) तैय्यब– दोनों की विलादत नुजूले वही के बाद हुई और ये भी कहा गया है कि तैय्यब और ताहिर दोनों अब्दुल्लाह के लक़ब हैं।

(4) हज़रत इब्राहीम रज़ि0 ये हज़रत मारिया के बतन से थे, सन् 8 हिजरी में पैदा हुए और सन् 10 हिजरी में वफात पाई।

बेटियाँः–

हुजूर सल्ल0 की चार लड़कियां थीं– ज़ैनब रज़ि0, रुकैय्या रज़ि0, उम्मे कुलसूम रज़ि0 और फातिमा रज़ि0।

(1) हज़रत फातिमा रज़ि0 एक क़ौल के मुताबिक़ सबसे छोटी लड़की हैं, उनकी विलादत नबुव्वत से पांच साल क़ब्ल हुई सन् 8 हिजरी या ग़ज़व–ए–ओहद के बाद हज़रत अली रज़ि0 से आप की शादी हुई, इनसे तीन लड़के अलहसन, अलहुसैन और अलमुहसिन और तीन लड़कियां ज़ैनब, उम्मे कुलसूम और रुकैय्या हुईं, अल्लाह के रसूल सल्ल0 की वफात के 6 महीने बाद आप भी मदीना में अल्लाह को पयारी हो गईं। इस वक्त आपकी उम्र 28 साल थी, आप से हज़रत अली और दोनो बेटे अलहसन और अलहुसैन और इब्ने अब्बास, इब्ने मसऊद, हज़रत आयशा, उम्मे सलमा और असमा बिन्ते उमैस रज़ि0 ने हदीसें रिवायत की हैं।

(2) हज़रत ज़ैनब रज़ि0– आमुलफील के तीसवें साल आपकी पैदाइश हुई ये आप सल्ल0 की सबसे बड़ी लड़की थीं और ये भी कहा गया है कि औलाद में सबसे बड़ी यहीं थीं, हज़रत ज़ैनब रज़ि को आपके खालाज़ाद भाई अबुल आस से शादी हुई, उनसे अली नामी एक लड़का पैदा हुआ और एक लड़की उमामा नामी हुई, आपकी वफ़ात सन् 8 हिजरी में हुई।

(3) हज़रत रुकैय्या– आमुलफील के 32वीं साल आपकी पैदाइश हुई आप उत्बा बिन अबी लहब के निकाह में थीं और आप की बहन उम्मे कुलसूम उतबा के भाई के निकाह में थीं लेकिन जब आयत ''तब्बत यदा अबी लहब'' नाज़िल हुई तो दोनों ने रुख़्सती से पहले ही तलाक़ दे दी। फिर हज़रत रुकैय्या रज़ि0 से हज़रत उस्मान ने निकाह किया और उनसे अब्दुल्लाह नामी एक लड़का पैदा हुआ। आपका इन्तिक़ाल उस वक़्त हुआ जब कि हुजूर अक़रम सल्ल0 गज़व–ए–बद्र में थे।

(4) उम्मे कुलसूम– हज़रत रुक़ैय्या की वफात के बाद हज़रत उस्मान रज़ि0 ने हज़रत उम्मे कुलसूम से सन् 3 हिजरी में शादी की आप का इन्तिक़ाल सन् 9 हिजरी में हुआ आपकी कोई औलाद नहीं थी।

आप सल्ल0 के चचा:-

हारिस, अबू तालिब, अज़्ज़ुबैर, हमज़ा, अबू लहब, अलगीदाक़, अलमुक़व्विम, ज़र्रार, अलअब्बास, कुसम, अब्दुल काबा, हजल, अलमुगीरा और तेरहवें अब्दुल्लाह हैं।

बाज़ लोगों ने अब्दुल काबा को अलमुक़व्विम बताया है और बाज़ लोगों ने अलग़ीदाक़ और ''हजल'' को एक बताया है बाज़ ने ''कुसम'' का शुमार ही नहीं किया, इन तमाम में सिर्फ हज़रत हमज़ा रज़ि0 और हज़रत अब्बास रज़ि0 मुशर्रफ ब इस्लाम थे अबू तालिब और अबू लहब ने इस्लाम का ज़माना पाया लेकिन इस्लाम की दौलत से मुशर्रफ नहीं हुए।

आप सल्ल0 की फूफियां:-

आप सल्ल0 की फूफियों में उम्मे हकीम बैज़ा, बर, आतिका, उरवी, उमैमा का नाम आता है, इनमें सफिया मुशर्रफ ब इस्लाम हुईं, ये भी एक क़ौल है कि आतिका और उरवी भी इस्लाम लाई थीं और मदीना हिज्रत की थी।

आप सल्ल0 की वफात:-

आप सल्ल0 की मरजुलमौत की मुद्दत 12 दिन या 14 दिन रही पीर के दिन दो या 12 रबीउल अव्वल सन् 11 हिजरी को चाश्त के वक़्त आप सल्ल0 ने इन्तिक़ाल फरमाया। आप सल्ल0 के वक़्ते तदफीन में कई अक़्वाल हैं, जिसमें राजेह क़ौल ये है कि बुध की रात दरमियानी हिस्सा में तदफीन हुई। बाज के नज़दीक मंगल की रात और बाज़ के नज़दीक मंगल का दिन मज़कूर है।

❖❖❖

लेख पुस्तिका के रूप में नीचे लिखे पतों से प्राप्त कर सकते हैं:-

1. जामिअतुन नूर, रखतवाड, पट्टन, गुजरात।

2. मकतबा नदवीया, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ उत्तर प्रदेश।

कुर्आन की शिक्षा ....

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दौर दौरा है अब तुम्हारा अत्याचार नहीं चलेगा, जब मुक़द्दमा आपकी अदालत में पहुंचा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया और यहूदियों में जो ज़ुल्म हो रहा था उसकी रोक–थाम भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा हो गई।

3. खुद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपनी ज़बान से भी तौरेत की पुष्टि (तस्दीक़) करते थे और इंजील में भी उसकी पुष्टि थी और मिलते जुलते आदेश थे। आगे इंजील वालों से कहा जा रहा है कि उनको इस पर अमल करना चाहिए था और ख़ास तौर पर उसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में जो शुभसमाचार हैं उनको मान कर ईमान लाना चाहिए।

4. मुहैमिन के कई अर्थ हैं प्रभावी, शासक, रक्षक, निगरां और हर अर्थ के लेहाज़ से कुर्आन मजीद पिछली किताबों के लिए मुहैमिन है, अल्लाह की जो अमानत उन किताबों में थी वह पूर्ण रूप से पवित्र कुर्आन में मौजूद है।

5. सबके मूल एक हैं लेकिन आदेशों में अंतर है, शरीअ़त अलग अलग है और यह भी अल्लाह की ओर से एक परीक्षा है कि आदमी जिस तरीक़े पर चलता रहा है और उसका आदी हो गया है, अब अल्लाह के आदेश से उसको छोड़ना उसके लिए मुश्किल हो जाता है बस जो अल्लाह के आदेश पर चलना चाहता है वह उसकी बात मानता है।

6. यहूदियों में आपस में विवाद हुआ एक ओर उनके बड़े–बड़े उलमा थे वे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ कर कहने लगे कि आप अगर हमारे पक्ष में फ़ैसला कर दें तो हम सब यहूदी मुसलमान हो जाएंगे यह बहुत बड़ी प्रस्तुति थी लेकिन आप ने इसे ठुकरा दिया और ठीक फ़ैसला कर दिया।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश की तारीख और दिन क्या है?

उत्तरः अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में रबीउल अव्वल के महीने में दो शंबे (सोमवार) के दिन सुब्हे सादिक़ (प्रत्यूष) के वक़्त पैदा हुए इसमें कोई इख्तिलाफ नहीं लेकिन तारीखे पैदाइश में इख्तिलाफ है सीरत की किताबों में 8 रबीउल अव्वल, 9 रबीउल अव्वल और 12 रबीउल अव्वल तीनों तारीखें मिलती हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0 ने अपनी किताब ''नफ्—हए—अंबरिया ब जिक्रे मीलादे खैरुलबरीया'' के पेज 24 पर आप की पैदाइश आठवीं तारीख और बकौले बाज बारहवीं तारीख लिखी है फिर हाशिये पर लिखा है कि ''हज़रत शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह0 ने ''मासबत बिस्सुन्ना'' में लिखते हैं कि शैख कुत्बुद्दीन कस्तलानी फरमाते हैं कि अक्सर मुहद्दिसीन ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के लिए इसी आठवीं तारीख को इख्तियार किया है और हज़रत इब्ने अब्बास से भी यही नक़्ल किया गया है और नसई ने बयान किया है कि अरबाबे सियर का इस पर इज्माअ़ है।

और बारहवीं तारीख पर हाशिये में लिखा है ''मा सबत बिस्सुन्ना ही में है कि यही क़ौल यानी बारहवीं तारीख मशहूर है और मुहद्दिसीन में से तीबी ने इसी को मुत्तफक़ अलैहि लिखा है मगर इसका मुत्तफक़ अलैहि होना महल्ले गुफतगू है''।

और हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 ने अपनी किताब ''नबीये रहमत'' पेज 127 पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीखे पैदाइश 12 रबीउल अव्वल लिखी है मगर हाशिये में लिखा है ''मशहूर रिवायत यही है लेकिन फलकयात के मशहूर मिस्री आलिम और मुहक्किक महमूद बाशा की तहक़ीक़ यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादते शरीफा दो शंबे के दिन 9 रबीउल अव्वल को फील के वाकिये के पहले साल हुई जो 20 अप्रैल 571 ई0 के मुताबिक है।''

मगर याद रहे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात मदीना मुनव्वारा में 12 रबीउल अव्वल दोशंबे के दिन 10 हिजरी को हुई इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इसमें कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है।

प्रश्नः मेराज किसे कहते हैं?

उत्तरः अल्लाह तआला के हुक्म से हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को जागते में बुराक़ पर सवार हो कर मक्का मुअ़ज़्ज़मा से बैतुल मक़्दिस तक और वहां से सातों आस्मानों पर और फिर जहां तक खुदा तआला को

मंजूर था वहां तक तशरीफ ले गए उसी रात में जन्नत और दोज़ख के मनाजिर देखे और फिर अपने मुक़ाम पर वापस आ गए इसी को मेराज कहते हैं।

प्रश्नः अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेराज जिस्मानी थी या मनामी (ख्वाब में)?

उत्तरः अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जिस्मे मुबारक के साथ मेराज में तशरीफ ले गए थे, इसलिए आप की मेराज जिस्मानी थी हाँ इस जिस्मानी मेराज के अलावा चन्द मरतबा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में भी मेराज हुई है वह मनामी मेराजें कहलाती हैं क्योंकि मनाम ख्वाब को कहते हैं लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख्वाब और इसी तरह तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम के ख्वाब सच्चे होते हैं, उनमें गलती और खता का शुब्हा नहीं हो सकता पस हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक मेराज तो जिस्मानी मेराज थी और चार या पांच मेराजें मनामी थीं।

प्रश्नः मोजिजा (मुअ़जिजा) किसे कहते हैं?

उत्तरः अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों से कभी ऐसी खिलाफे आदत बातें ज़ाहिर करा देता है जिन के करने से दुन्या के और लोग आजिज़ होते हैं ताकि लोग ऐसी बातों को देख कर समझ लें कि यह खुदा के भेजे हुए हैं, ऐसी बातों को मोजिजा कहते हैं।

प्रश्नः हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ मोजिजे बताइये।

उत्तरः हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बेशुमार मोजिजे जाहिर हुए हैं उनमें सबसे बड़ा मोजिजा कुर्आने मजीद है कि चौदह सौ वर्षों से ज़ियादा अर्सा गुजर गया लेकिन आज तक अरबी ज़बान के बड़े से बड़े आलिम फाज़िल बावजूद अपनी कोशिश खत्म कर डालने के भी कुर्आन मजीद की छोटी सी छोटी सूरत के मिस्ल भी न बना सके और न क़ियामत तक बना सकेंगे।

आप का दूसरा बड़ा मोजिजा मेराज है, तीसरा मोजिजा शक़्क़ुल क़मर, चौथा मोजिजा आप की पेशीन गोइयां, पांचवां मोजिजा आप की दुआ से खाने में बरकत, इसी तरह आप से बेशुमार मोजिजे जाहिर हुए।

प्रश्नः हम दुरूद में पढ़ते हैं, ''अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुह़म्मदिंव व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम'' एक साहिब ने कहा दुरूद में ''मौलाना'' का शब्द लाना या आलिमों के नाम के साथ ''मौलाना'' का शब्द लाना दुरुस्त नहीं है, इसलिए कि कुर्आन मजीद में अल्लाह तआला के लिए ''अन्त मौलाना'' आया है क्या उन का कहना सहीह है?

उत्तरः दुरूद में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ''मौलाना'' का शब्द लाना दुरुस्त है इसी प्रकार आलिमों के नाम के साथ मौलाना का शब्द लाना दुरुस्त है, उसकी दलील बुखारी शरीफ़ और तिर्मिजी शरीफ की हदीसें हैं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद से फरमाया ''अन्त अख़ूना व मौलाना'' (बुखारी शरीफ बाब उमरतुल क़ज़ा)

और हज़रत अली रज़ि0 के विषय में फरमाया ''मन कुन्तु मौलाहु फअ़लीयुन मौलाहु'' (तिर्मिजी शरीफ बाब मनाक़िबे अली रज़ि0)। मौलाना का शब्द अल्लाह के लिए भी आता है और गैरुल्लाह के लिए भी।

नोटः– हिन्दी में अ़रबी इबारत में जिस पूरे अक्षर में हलन्त हो उसको साकिन पढ़ें और जिस पूरे अक्षर में हलन्त न हो उसको जबर से पढ़ें ज़बर के लिए ''आ'' की मात्रा लाना गलत है।

प्रश्नः हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आखिरी नबी हैं उनके बाद कियामत तक कोई नबी न आएगा लेकिन क़ियामत के करीब हज़रत ईसा अलै0 आसमान से उतारे जाएंगे वह उस वक़्त भी नबी होंगे इस का क्या जवाब है?

उत्तरः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पहले से नबी हैं हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद नबी नहीं बनाए गए वह दज्जाल के क़त्ल के लिए आसमान से उतारे जाएंगे वह उस वक़्त भी नबी होंगे लेकिन वह अपनी शरीअ़त न चलाएंगे हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत पर चलेंगे इसलिए हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आखिरी नबी होने में कोई फर्क न आएगा।

यहूदियों की साज़िश से जब ईसा अलै0 को सलीब पर चढ़ाने का हुक्म हुआ तो अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै0 को ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया और एक शख्स को उनकी शक़्ल का कर दिया जिसको सलीब पर चढ़ाया गया। हज़रत ईसा अलै0 चौथे आसमान पर अपने जिस्म के साथ जिन्दा हैं वह चौथे आसमान पर हैं क़ियामत के करीब आसमान से उतारे जाएंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे, हज़रत महदी की वफ़ात के बाद काफी दिनों तक हुकूमत करेंगे फिर उनका इन्तिक़ाल होगा यह जो मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी अपने को हज़रत ईसा मसीह बताता है यह बिल्कुल ग़लत है इसी तरह वह अपने को महदी बताता है यह भी ग़लत है, वह अपने को नबी बताता है यह भी ग़लत है।

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी ..... की यही अस्थिरता, सर्वमान्य बातों की यही कमी और अच्छे बुरे के स्टैंडर्स का यही परिवर्तन पाया जायेगा। शुद्ध प्रवृत्ति, राष्ट्रीय चलन व परम्परायें नई पुरानी दीक्षा कुछ दिनों ज़रूर इसकी हिफाज़त करती है, मगर यह बहुत कमज़ोर किस्म की चीजें हैं यह नेशन के संकट तथा अनैतिकताओं और अव्यवस्थाओं का मुकाबला नहीं कर सकतीं। अनैतिकताओं और अव्यवस्थओं के पीछे उनको जायज तथा बेहतर करार देने के लिए अप्रकार के नैतिक व सामूहिक फलस्फे होते हैं जिनकी ताक़त फितरत की आवाज़ को दबा देती है और राष्ट्रीय परम्पराओं और तहजीब के तिलिस्म (जादू) को भी तोड़ देती है और धीरे–धीरे उस क़ौम का दामन हर प्रकार की सर्वमान्य बातों और हर ऐसी चीज़ से खाली हो जाता है जो अच्छे–बुरे और नैतिक व अनैतिक की जांच के लिए तराजू का काम दे सके।

◆◆◆

नई पीढ़ी की सुरक्षा समय का महत्वपूर्ण कर्तव्य

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी

शरीर के वस्त्रों पर अगर कोई खरोच लग जाए या सीवन खुल जाए, आभूषण का कोई छोटे से छोटा भाग टूट जाए, उस पर मैल जम जाए तो सारे काम छोड़ कर उनको शुद्ध कराने की चिन्ता होती है, परन्तु संतान में बड़े से बड़ा विकार आ जाए या उसके आचरण बिगड़ जाएं उस का दीन खराब हो रहा हो उस की भाषा गन्दी हो जाए तो न्याय से बताइये कि माता पिता को कितनी चिन्ता होती है, वह उनको सुधारने के लिए कितना समय लगाते हैं एक ऐसे हार के लिए बड़े से बड़ा प्रबन्ध होता है जो केवल एक सभा या गोष्ठी में गले का हार बन कर रह जाता है मगर संतान जो पूरे जीवन के लिए गले का हार होती है उसको आचरणवान तथा अच्छा बनाने की क्या माता पिता को चिन्ता होती है? क्या यह बात चिन्ता योग्य नहीं है? क्या इस उद्देश्य के लिए धनदौलत व्यय करने की आवश्यकता नहीं? और क्या कोई इस बात को नकार सकता है कि जीवन की यह पूंजी और बहुमूल्य आभूषण आज किस प्रकार दर दर की ठोकरें खा रहा है, सड़कों पर आवारा फिर रहा है, विकृत सोसाइटी की भेंट चढ़ रहा है, नीच तथा घृणित संगतों और विकृत वातावरण में समय बिता रहा है जिस का परिणाम नाश विनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं।

जिस देश में हम रहते बसते हैं यहां की परिस्थितियां हमारे बच्चों के लिए आशंकित होती जा रही हैं, यदि हम स्वयं इस ओर ध्यान न देंगे और अपनी पूरी शक्ति संतान की शिक्षा दीक्षा में न लगाएंगे तो धर्म त्याग तथा धर्म विमुखता का व्यापक

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

विकार हमारी नस्लों का विनाश कर देगा, जिसके लक्षण आरंभ हो चुके हैं यह वह जटिल समय है जिसमें हम अचेतना तथा शिथिलता छोड़ कर और अपनी सारी चिन्ताएं छोड़ कर नस्लों (वंशों) की सुरक्षा के लिए काम करें हम को किसी दूसरी क़ौम से शिकायत करने का अधिकार नहीं, ना ही किसी से भीख मांगने की आवश्यकता है और जीवित क़ौमें कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी साहस तथा संकल्प में पीछे नहीं हटतीं।

हम को चाहिए कि हम अपने छोटे बच्चों की दीनी शिक्षा का निजी तौर पर प्रबन्ध करें और बड़े बच्चों की देख भाल रखें उनको बुरी संगतों से बचाएं उनको दीनदारों से संबंध रखने का निर्देश दें जब तब उनसे

शेष पृष्ठ....34 पर

आख़िरत की कमाई को दुन्या की कमाई न बनाएं

—मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी —हिन्दी अनुवादः हुसैन अहमद

एक इन्सान की अपने ख़ालिक़ (निर्माता) व मालिक से जो निस्बत (संबंध) है, उसमें सबसे अहम निस्बत अ़ब्दीयत (दास्ता) और बन्दगी की है, इन्सान अब्द (बन्दा) है और अल्लाह तआला माबूद (उपास्य) है, इन्सान ग़ुलाम है और अल्लाह इसके आक़ा (मालिक) हैं अल्लाह का बन्दा होना इन्सान के लिए बड़ा सम्मान है अल्लाह तआला ने मेराज के मौक़े पर अपने प्रिय रसूल को अपना बन्दा कहा है।

अनुवादः *''पाक ज़ात है वह जो अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक ले गया''* *(बनी इसराईलः 1)*

इसमें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सर्वश्रेष्ठ सम्मान है।

इन्सान अपनी बन्दगी का अपने अमल के जरिये इज़हार करे, इसी को इबादत (उपासना) कहते हैं और अल्लाह तआला ने इन्सानों और जिन्नों को इसीलिए बनाया कि वह अल्लाह की इबादत करें।

अनुवादः *''और मैंने तो जिन्नात और इन्सान को पैदा ही इसी गरज़ से किया है कि मेरी इबादत किया करें।''*

(अज—जारियातः 56)

हर नबी ने अपनी शिक्षाओं में इन्सानों को अल्लाह तआला की इबादत की तरफ दावत दी है और उसके तरीक़े बताए हैं और अल्लाह के आखिरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत में जिस तफ़्सील से इबादत का तरीक़ा और उसके अहकाम बताए गए, किसी दूसरे मज़हब में इसकी मिसाल नहीं मिलती।

इबादत का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सामने अपनी ज़िल्लत (हीनता) के इज़्हार के साथ बेहद झुकाव और आखिरी दर्जे की तवाज़ो (नम्रता) इख्तियार करना है।

इबादत में जहां अल्लाह तआला के सामने इज्ज़ (विवशता) का इज़्हार जरूरी है वहीं अल्लाह तआला से हद दर्जे महब्बत और दिल में अल्लाह की गैर मामूली चाहत का एहसास भी जरूरी है। अल्लामा इब्ने कय्यिम फरमाते हैं—

अनुवादः *''इबादत ऐसे अमल का नाम है, जिसमें आख़िरी दर्जे की महब्बत भी हो और आखिरी दर्जे का झुकाव भी''।*

(मदारिजुस्सालिकीनः 85—86)

लिहाज़ा वह आमाल (कर्म) इबादत में गिने जाएंगे जो केवल अल्लाह के लिए किए जाते हैं और गैरुल्लाह के लिए नहीं किये जा सकते जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, कुर्बानी, सज्दा, तिलावत, (कुर्आन पाठ), दुआ, नज़्र आदि, कुछ काम अल्लाह के लिए भी किये जा सकते हैं और इन्सानों के लिए भी, अगर उनको बेहतरीन नीयत से किया जाए, अल्लाह की रिज़ा और रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी मक़्सूद हो तो इन्शा अल्लाह वह भी सवाब का काम होगा लेकिन वह अस्ल में ताअ़त (अज्ञापालन) है वास्तविक अर्थ में वह इबादत (उपासना) नहीं है अल्लामा अबू हिलाल अ़स्करी ने लिखा है कि इबादत और ताअत (उपासना तथा आज्ञापालन) के बीच मौलिक अंतर यही है कि इबादत केवल अल्लाह के लिए की जा सकती है लेकिन ताअत अल्लाह के लिए मख़्सूस (विशिष्ट) नहीं है।

(अल–फुरूकु फिल्लुगतिः 182)

इबादत का एक बुन्यादी हुक्म (मौलिक आदेश) यह है कि वह अज्र (आखिरत में सवाब) के लिए की जाए उजरत (संसार में बदले) के लिए नहीं इबादत का बदला आख़िरत (अगले जीवन) ही में मिलेगा, अल्लाह के सारे नबी अलै0 अपनी खास हैसीयत के एतिबार से हर काम अल्लाह ही के हुक्म से करते थे, कुर्आन ने अंबिया अलै0 से कहलाया–

अनुवादः *"मेरा बदला तो केवल अल्लाह पर है, (हूदः29)।*

जब कोई काम माद्दी (बदले) के लिए किया तो फिर वह तिजारत बन जाता है, और इबादत तिजारत के मक़ासिद (उद्देश्य) से बिल्कुल अलग है, इसीलिए इबादत के लिए मख्सूस (विशिष्ट) जगह पर तिजारत से बचने का आदेश है मस्जिदें अल्लाह का घर हैं और अल्लाह की इबादत के लिए ही बनाई गई हैं, अतएव मस्जिदों में खरीदने बेचने और कारोबार की बातचीत से रोका गया है, यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस को भी पसन्द नहीं फरमाया कि कोई अपनी खोई हुई चीज़ का एलान मस्जिद में करे अगर कोई अपनी खोई हुई चीज़ का मस्जिद में एलान करे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उससे कह दो तुम्हारी चीज़ न मिले।

इसी लिए फुक़हा (विद्वानों) का मत है कि जो इबादत के काम मुसलमानों के लिए मख्सूस हैं, जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, तिलावते कुर्आन, जिहाद उन पर उजरत लेना जाइज़ नहीं है, एक सहाबी हज़रत उस्मान रज़ि0 की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से जो आखिरी वादा लिया वह यह है कि अगर मैं मुअज़्ज़िन मुकर्रर किया जाऊँ तो अज़ान पर उजरत न लूं।

(तिर्मिजीः 1/4310)

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि0 रिवायत करते हैं कि मैंने अहले सुफ्फ़ा में से कुछ लोगों को कुर्आन पढ़ना और लिखना सिखाया, मुझे पढ़ने वालों में से एक ने एक कमान तोहफे में दी, मैंने सोचा कि यह खास माल तो है नहीं, मैं उसे जिहाद में इस्तेमाल करूंगा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जिक्र किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर तुम्हें यह बात पसन्द आती हो कि अल्लाह तुम्हें आग की कमान पहनाए तब क़बूल कर लो। (अबू दाऊद मअ़ औनुल माबूदः 3/276)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन बिश्र अंसारी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि कुर्आन पढ़ो,

मगर उसमें गुलू न करो और न उसको खाने और दौलत में इज़ाफे का जरीआ़ बनाओ।

(फैजुल क़दीरः 2/64)

यह और बात है कि इबादत से मुतअल्लिक़ बाज़ अफआ़ल ऐसे हैं जिन में अमल के साथ साथ वक़्त की भी ज़रूरत है, जैसे नमाज़ कहीं भी पढ़ी जा सकती है, इत्तिफाक़ से अगर किसी ने कहीं नमाज़ की इमामत कर दी और एक जमाअत ने उस के पीछे नमाज़ अदा कर ली तो उसमें कुछ ज़ियादा वक़्त की ज़रूरत नहीं, लेकिन अगर किसी खास मस्जिद में किसी को इमाम मुकर्रर किया जाए तो वह पांचों नमाजों के वक़्त का पाबन्द हो जाता है, इसी तरह कोई शख्स मुदर्रिस की हैसियत से कुर्आन और इस्लामी उलूम की तालीम दे और मुकर्ररा वक़्त उस में लगाया करे जिसकी पाबन्दी उस पर लाज़िम हो ऐसी सूरत में इमाम मालिक और इमाम शाफई ने उजरत लेने की इजाज़त दी है लेकिन जब सूरते हाल यह हो गई कि बासलाहीयत इमामों का मिलना कठिन हो गया मुसलमान बच्चे और बड़े कुर्आन की शिक्षा से वंचित होने लगे तो बाद के हनफी और हंबली आलिमों ने भी इन कामों पर उजरत की इजाज़त दे दी इसलिए कि काम की उजरत नहीं है वक़्त की उजरत है और वक़्त की उजरत लेना जाइज़ है।

इसी तरह हज और जिहाद की उजरत लेना जाइज़ नहीं इसलिए कि यह काम सिर्फ़ अल्लाह के लिए किये जाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में हिज़रत भी इबादत थी चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिजरत करेगा उस का यह अमल बाइसे अज्र बनेगा और जो किसी और मक़्सद (उद्देश्य) के लिए हिजरत करेगा वह हिजरत के सवाब से महरूम रहेगा, (बुख़ारी) गरज़ की इबादत पर इबादत का रंग बाक़ी रहना चाहिए।

खेद की बात यह है कि इस वक़्त मुसलमानों में एक खास रुजहान इबादतों से तिजारती फाइदे हासिल करने का बनता जा रहा है, इसाले सवाब का दुरुस्त होना हदीस से साबित है और बाज़ अहले इल्म को छोड़ कर अहले सुन्नत इस पर सहमत हैं कि कुर्आन शरीफ की तिलावत (पाठ) का इसाले सवाब किया जा सकता है। मगर इस पर उजरत का लेना जाइज़ नहीं, अल्लामा शामी ने लिखा है कि अगर कुर्आन की तिलावत उजरत ले कर की जाए तो इसमें सवाब न मिलेगा और जब सवाब मिलेगा ही नहीं तो दूसरे को कैसे बख्शा जा सकता है?

यह जो मुस्लिम समाज में बाज़ जगह रवाज है कि इसाले सवाब के लिए कुछ लोग उजरत पर कुर्आन पढ़ते हैं यह बिल्कुल ग़लत है और इबादत को तिजारत बनाना है।

तरावीह़ की नमाज़ में कुर्आन ख़त्म करना वाजिब नहीं है, ज़ियादा से ज़ियादा सुन्नत है, अल्लाह का शुक्र है कि आज कल हाफिजों की बड़ी तादाद मौजूद है और शहर से गांव तक हर जगह

तरावीह पढ़ाने के लिए आसानी से हाफिज मिल जाते हैं, अगर तरावीह पढ़ाने वाले की तरफ से उजरत की मांग न हो बल्कि इन्कार हो और उस की नीयत खालिस हो कि अगर उसे कोई उजरत न मिले तब भी वह नमाज़ पढ़ाएगा, इसके बावजूद लोग अपनी तरफ से एक हाफिज़े कुर्आन की खिदमत की नीयत से हदीया (उपहार) पेश कर दें तो पेश करने वालों के लिए सआ़दत और उस हाफिज़ का क़बूल करना जाइज़ है। लेकिन हाफिज़ की तरफ से उस का मुतालबा करना और दोनों फरीक़ों का मिल कर उजरत तय करना यह यक़ीनन इबादत को तिजारत के दर्जे में ले आना है, और कुर्आन मजीद के एहतिराम के खिलाफ़ है।

हज इस्लाम का पांचवां रुक्न और अहम तरीन इबादत है, हज के लिए सऊदी सिफारत खाने से वीजा ले कर मक्के का सफ़र करना पड़ता है यह काम इनफिरादी हैसीयत से नहीं हो पाता हमारे यहां सरकारी तौर पर यह काम हज कमेटी करती है हज कमेटी हाजियों का वीज़ा हासिल कर के हवाई जहाज़ द्वारा जद्दा या मदीना पहुंचाती है। फिर सऊदी हुकूमत की मदद से वहां ठहरने और मदीने से मक्का, और मक्का से मिना, अरफात, मुज़दल्फा वगैरा पहुंचा कर हज करने में मदद करती है। खाने पीने का नज़्म हाजी को खुद से करना पड़ता है, लेकिन हमारे यहां कुछ रजिस्टर्ड मुस्लिम टूरिस्ट कम्पनियां हैं उनको हज के वीज़े अलाट होते हैं वह लोगों को ले जा कर हज कराते हैं आने जाने ठहरने खाने पीने का पूरा नज़्म करते हैं और हाजियों को खूब आराम पहुंचाते हैं यह काम वह तिजारती बुन्यादों पर करके नफा कमाते हैं और सवाब भी कमाते हैं लेकिन बड़े खेद की बात है कि बाज़ कम्पनियां सऊदी सिफारत खाने से मुफ़्त मिले हुए वीज़े बेचती हैं जो उनके लिए नाजायज़ और हराम हैं इसी तरह यह कम्पनियां उमरे के वीज़े भी बेच कर नाजाइज़ काम करती हैं, अल्लाह उनको हिदायत दे। और वह यह ग़लत काम छोड़ कर अपनी मेहनत की मुनासिब उजरत ले कर यह काम अंजाम दें इस तरह वह अपनी तिजारत को भी इबादत बना सकते हैं।

❖❖❖

(तामीरे हयात 25 जुलाई 2018 से ग्रहीत)

नई पीढ़ी की सुरक्षा.....

इस्लामिक विश्वास के विषय पर बातचीत करें उनको सांसारिक शिक्षाओं के साथ आवश्यक दीनी शिक्षाओं से सुसज्जित करें। उनको प्रतिदिन कुछ कुर्आन पाठ (तिलावत) के लिए प्रेरित करें नमाज़ों में कोताही न करने दें, संभव हो तो अपनी औलाद को पवित्र कुर्आन कंठस्थ (हिफ़्ज़) कराएं और आलिम बनायें, अल्लाह तआला आप की और हमारी मदद करे और हमारी संतान को बुराईयों से बचा कर इस्लाम पर जमे रहने का सामर्थ्य दे।

❖❖❖

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

—इदारा

भ्रूण हत्या करो नहीं तुम बेटी पैदा होने दो
भ्रूण हत्या महापाप है किसी को न तुम करने दो
बेटी रब की रहमत है बिन बेटी मानव यह कहां
रब की रहमत होती है वां यह बेटी पलती है जहां
चलना फिरना उसे सिखाओ शर्मो हया की शिक्षा दो
भाई बहन और माता पिता के आदर की तुम शिक्षा दो
हिन्दी उर्दू दीन सिखाओ अंग्रेज़ी भी उसे पढ़ाओ
साइंस और भूगोल पढ़ाओ मैथ उसे तुम ख़ूब पढ़ाओ
घर की सफाई उसे सिखाओ फर्स्टएड का ज्ञान पढ़ाओ
ख़ाना बनाना उसे सिखाओ पकवानों की विधि बतलाओ
सृष्टि ये सारी किसने रची है निर्माता का ज्ञान भी दो
पथप्रदर्शक जो हैं आए उनका उसको ज्ञान भी दो
बी0ए0, एम0ए0 उसे कराओ पी0एच0डी0 तक उसे पढ़ाओ
अजनबियों में उसे न छोड़ो दुष्कर्मो से उसे बचाओ
प्यारे नबी का ज्ञान उसे दो और उसे कुर्आन पढ़ाओ
पापों से तुम उसे बचाओ दोज़ख से तुम उसे बचाओ
बेटी बचाओ बेटी पढ़ओ का मतलब हां यही तो है
ना महरम से दूर रहे वह सहीह बचाना यही तो है
जीवन साथी उसका ढूंढ़ो इसमें उसकी मर्जी हो
हुनरमन्द हो, सेहतमन्द हो, अ़क़्द उसी से उस का हो
सम्बन्धी सब करें दुआ़एं जीवन उसका सुखी रहे
दुन्या में भी सुखी रहे और उक़्बा में भी सुखी रहे

❖❖❖

मुस्लिम महिला और हमारा समाज

—उबैदुल्लाह मतलूब

क्या कोई महिला ऐसी है जो अपनी सुन्दरता न चाहती हो.....? क्या कोई महिला ऐसी है जो अपनी त्वचा कोमल और सुन्दर न चाहती हो? क्या कोई महिला ऐसी है जो अपने बालों की सुन्दरता न चाहती हो? कोई महिला भी नही चाहती कि धूप में हार्ड वर्क करके अपनी सुन्दरता को प्रभावित करे, कोई महिला ऐसी नहीं है जो कई घण्टों तक कठिन परिश्रम में व्यस्त रहना चाहती हो, हर महिला चाहती है कि वह काम करे, मगर हल्के—फुल्के ताकि उसकी कोमलता में अन्तर न आये। अतः इन्हीं दृष्टिकोणों को सामने रखते हुए मुसलमान अपनी स्त्रियों को परिश्रम पर विवश नहीं करते। इस्लाम के विधान में भी यही है कि महिला के जीवन की समस्त आवश्यकताओं को उसका पति पूरा करे यही कारण है कि मुस्लिम महिला अपने मन और अपनी इच्छा से अपने घर में सुरक्षित रहना पसन्द करती है। वह अपने घर की सफाई के लिए किसी नौकरानी को नहीं ढूंढ़ती, वह अपने घर की सफाई स्वयं करती है, वह अपने परिवार के लिए अच्छी रसोई तैयार करती है, स्वादिष्ट और पौष्टिक रसोई तैयार करती है, वह अपने परिवार को समय पर भोजन खिलाती है, बर्तन धोती और उनकी सफाई करती है, अपने पति के कपड़ों को ठीक ठाक रखती है, अपने पति के सिर में मालिश करती है, अपने बच्चों की देखभाल करती हैं, उनका मल—मूत्र धोती है, उनके कपड़े बदलती है उनको समय पर पौष्टिक आहार खिलाती है। उनको उठना बैठना सिखाती है, उनको लिखना पढ़ना भी सिखाती है, अब तो इस उन्नतिकाल में कपड़े टेलर से सिलवाये जाते हैं, लेकिन पहले मुस्लिम महिला कम से कम अपने और अपने बच्चों के कपड़े खुद सिलती थी यह और इस तरह के और भी काम मुस्लिम महिला करती थी और करती है, क्या इस तरह के काम स्वतः हो सकते हैं, क्या इन कामों के लिए एक मुसलमान नौकरानी तलाश करे, ज़रा सोचने और समझने की बात है। यह कहना बिल्कुल ग़लत है कि मुस्लिम महिलाएं समाज से कटी हुई होती हैं, मुस्लिम महिलाएं अपने पड़ोस से अपने महल्ले से और अपने समाज से पूरी तरह जुड़ी होती हैं अलबत्ता धनवानों और अमीरों के घर की महिलाएं चाहे वह मुस्लिम घर की हों या ग़ैर मुस्लिम घर की वह अपना बड़प्पन क़ाइम रखने के लिए समाज से ज़रूर कटी होती हैं, वह तो केवल कुछ गिनी चुनी होती हैं, उनको देख कर आ़म मुस्लिम महिलओं के बारे में फैसला देना कि वह समाज से कटी होती हैं ग़लत है।

यह बात भी ग़लत है कि मुस्लिम महिलाएं अनपढ़ होती हैं इसलिए कि इस्लाम धर्म इल्म से जुड़ा हुआ है, कुछ पढ़े बग़ैर इस्लाम धर्म

पर चलना असम्भव है, हो सकता है कि एक शख़्स लिखना पढ़ना न जाने परन्तु इस्लाम धर्म के ज्ञान से हर मुसलमान अवगत होता है, अतः मुस्लिम महिलाएं कुछ पढ़ी ज़रूर होती हैं।

यह कहना भी ग़लत है कि मुस्लिम महिलाएं बेहुनर होती हैं, सच यह है कि गैर–मुस्लिम महिलाओं के मुक़ाबले में मुस्लिम महिलाएं अधिक हुनर वाली होती हैं, सिलाई, कढ़ाई और भांति–भांति के खाने पकाने में वह अपना जवाब नहीं रखतीं।

यह कहना भी ग़लत है कि मुस्लिम महिलाएं अपने घरों में क़ैद रहती हैं, मुस्लिम महिलाओं के लिए अपने घर से बाहर निकलना मना नहीं है, वह बाहर निकल सकती हैं और निकलती हैं अलबत्ता उनके लिए पर्दा ज़रूरी है, पर्दे का यह मतलब नहीं है कि वह निक़ाब ही पहन कर बाहर निकलें बल्कि पर्दे का यह मतलब है कि उनका शरीर ढीले ढाले कपड़े से ढका रहे। यहां एक वाक़िये का ज़िक्र ज़रूरी समझता हूं। मैं एक बार एक दूकान से कुछ फल खरीद रहा था फल बेचने वाली एक खटिक औरत थी, सामने से एक नौजवान ख़ूबसूरत लड़की गुज़री, उसके जिस्म पर इतना तंग लिबास था कि लगता था कि उसके स्तन कपड़ा फाड़ कर बाहर आ जाएंगे यही हाल नितंबों का था यह देख कर पचास वर्षीय खटिकिन बोली, ''लोग कहते हैं कि लड़के लड़कियों को छेड़ते हैं, यह पहनावा तो पुकार पुकार कर कहता है कि मुझ को क्यों नहीं छेड़ते....? मुझको छेड़ो,'' अतः मुस्लिम महिला चटक मटक के कपड़े पहन कर बेपर्दा बाहर निकलने को हराम समझती है, उसकी शरीअ़त भी इसको अवैध बताती है, मुस्लिम लड़की तथा मुस्लिम महिला बाहर निकलती है मगर पर्दे के साथ, कभी सादा निक़ाब पहन कर, कभी ईसाई ननों की तरह मैक्सी पहन कर और सर ढक कर, तो कभी चादर ओढ़ कर।

मुस्लिम लड़कियां, लड़कियों के स्कूल में, लड़कियों के कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करती हैं, बी0ए0 करती हैं, एम0ए0 करती हैं डॉक्ट्रेट की डिग्री भी प्राप्त करती हैं, मगर पर्दे से, पर्दे से यह सब संभव है, अब तो सरकार की ओर से लड़कियों के लिए बी0यू0एम0एस0 कालेज भी खुल गये हैं, वह आसानी से चिकित्सक भी बन सकती हैं और बनती हैं, कितनी मुस्लिम महिलाएं नर्सिंग होम द्वारा समाज की सेवा कर रही हैं। अल्लाह की तौफीक़ से आज कल मुसलमानों में अपने तौर पर मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा के लिए बहुत से ऐसे दीनी मदरसे खोल रखे हैं जिन में उर्दू, अरबी और दीन्यात के विषयों में बी0ए0 के अस्तर की शिक्षा होती है। आरंभिक कक्षाओं में हिन्दी और हिसाब भी पढ़ाते हैं, अंग्रेज़ी तो ऊपर की कक्षाओं तक रहती है। इन मदरसों से हर वर्ष हज़ारों लड़कियां फारिग़ हो कर अपने परिवार तथा समाज की सेवा में लगती हैं इन मदरसों की फारिग़ लड़कियां बड़ी सूझ बूझ

रखती हैं वह नैतिकता, सभ्यता और मानवता के ज्ञान में अपनी वतनी बहनों से बहुत आगे होती हैं। सदाचारिता तथा उदारता उनका स्वभाव होता है, आज कल तो कुछ यूनिवर्सिटियों ने इन मदरसों को मान्यता दे रखी है जिससे वहां की फारिग़ लड़कियों के लिए बी0ए0 करना बहुत आसान हो गया है फिर जिन को अवसर मिलता है वह एम0ए0 भी करती हैं और पी0एचडी0 भी कर लेती हैं यह सब पर्दे के साथ संभव है। अल्लाह का शुक्र है कि हमारे देश में महिलाओं के पर्दों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। मुस्लिम महिलायें बच्चों की टीचिंग का काम पर्दे के साथ भली भांति कर सकती हैं और करती हैं। और मुस्लिम महिलाओं के लिए कोई वैध काम मना नहीं है, वह हर वैध काम पर्दे से कर सकती हैं और करती हैं, मुस्लिम महिलाओं के लिए नामहरमों से मित्रता अवैध है, वह नामहरमों से न तो एकांत में मिल सकती हैं और न उनको छू सकती हैं, न उनको अपना बदन छूने की अनुमति दे सकतीं हैं, सिवाय इसके कि शरई ज़रूरत हो जैसे बीमार औरत को ना महरम डॉक्टर ज़रूरत पर देख सकता है छू सकता है और ऑप्रेशन कर सकता है।

नामहरम और महरम की परिभाषा इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म या कल्चर में नहीं पायी जाती अतः उसका परिचय आवश्यक है।

नारी का पति तो उसका सब कुछ है उसके शरीर का अधिकारी है उसके अतिरिक्त जो महरम मर्द हैं औरत उनसे सभ्यता के साथ मिल जुल सकती है, उनसे एकांत में भी मिल सकती है, हँस बोल सकती है, वह महरम मर्द यह हैं– बाप, चचा, दादा, मामा, नाना, भाई, भाई के बेटे, बहन के बेटे, अपने बेटे, पोते, नवासे, पति के वह बेटे जो उसकी दूसरी पत्नी से हों, इनके अतिरिक्त सब मर्द ना महरम हैं उनसे पर्दा आवश्यक है, इसी में उसकी इज़्ज़त व आबरू की सुरक्षा है, दुष्कर्मो से नारी को बचाने के लिए नामहरमों से पर्दा बहुत ज़रूरी है।

दुष्कर्म की परिभाषा भी अजीब है, इस्लाम में अपने पति के अतिरिक्त किसी नामहरम से मित्रता अवैध है और पति के अतिरिक्त किसी से सहवास महापाप और बड़ा अपराध है, इस्लाम में उस पर बड़ा कठिन दण्ड है, मौत का भी दण्ड है परन्तु हमारे न्यायालय में अगर सहमति से मित्रता हो, सहवास हो तो दण्डनीय नहीं है, हमारे न्यायालय में दुष्कर्म वह है जो नारी की सहमति के बिना मर्द उससे जबरन सहवास करे। सच यह है कि मुस्लिम महिला पर्दे के साथ जिस समाज में अपनी सेवाएं देगी वह समाज स्वच्छ तथा शांतिमय रहेगा।

आजकल कुछ मुस्लिम महिलाएं पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित हो कर जो इस्लामी पर्दा छोड़ बैठी हैं यह उनकी नासमझी है, दीनदार औरतों का कर्तव्य है कि वह उनको समझाने की कोशिश करें, कोशिश करना अपना काम है, सत्य मार्ग दर्शाना अल्लाह के अधिकार में है।

❖❖❖

आमिना का लाल

—हाफ़िज़ आ़रिफ़ नदवी

हम को दोज़ख़ से बचाया आमिना के लाल ने
बाग़ जन्नत का दिखाया आमिना के लाल ने

दुशमनों के हक़ में भी रब से दुआ़—ए—ख़ैर की
उनको सीने से लगाया आमिना के लाल ने

करके उंगली से इशारा मुअ़जिज़ा की शक्ल में
चाँद टुकड़े कर दिखाया आमिना के लाल ने

कर दिया आगाह हम को ख़ैर व शर की बात से
हुक्म यह रब का सुनाया आमिना के लाल ने

पत्थरों ने भी पढ़ा कल्मा रसूलुल्लाह का
मुअ़जिज़ा यह भी दिखाया आमिना के लाल ने

हर घड़ी आपस में हम सब मुत्तहिद हो कर रहें
यह सबक़ हम को सिखाया आमिना के लाल ने

फ़र्ज़ है उम्मत पे या रब पाँच वक़्तों की नमाज़
अपनी उम्मत को बताया आमिना के लाल ने

◆◆◆

मौलाना मुहम्मद ख़लीक़ नदवी को सदमा, बड़े भाई की अहलिया का इन्तिक़ाल

ख़ुर्रम नगर, लखनऊ के मौलाना मुहम्मद ख़लीक़ नदवी (कल्लन) इल्मी व दीनी हल्क़ों में एक साहबे ख़ैर की हैसियत से मशहूर हैं, अल्लाह तआला ने इन को इस सिलसिले में तौफ़ीक़ ख़ास से नवाज़ा है, इन के मरहूम बड़े भाई मुहम्मद शफ़ीक़ सिद्दीक़ी की अहलिया मुहतरमा अपने छोटे बेटे मुहम्मद अदनान सिद्दीक़ी के हमराह हज के मुबारक सफ़र पर गई हुई थीं कि दौरान हज ही मक्का में एक रोज़ की मुख़्तसर बीमारी के बाद 15 ज़िल्हिज्ज 1439 हिजरी मुताबिक़ 27 अगस्त 2018 ई0 को अपने मालिक हक़ीक़ी से जा मिलीं, इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

मरहूमा एक दीनदार, इबादत गुज़ार और रिश्तेदारों का बड़ा ख़याल रखने वाली ख़ातून थीं, पसमन्दगान में पांच बेटे मु0 रिज़वान, मु0 रैहान, मु0 फ़ैज़ान, मु0 ज़ीशान, मु0 अदनान और चार बेटियां हैं, छोटा बेटा मुहम्मद अदनान सिद्दीक़ी दारुलउलूम नदवतुल उलमा ही में ज़ेरे तअ़लीम है। अल्लाह तआला मरहूमा को जन्नतुलफिर्दौस में आ़ला मुक़ाम अ़ता करे और पसमान्दगान को सब्र जमील दे। आमीन! इदारा इन के ग़म में बराबर का शरीक़ है।

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

बस वंदना रहमान की

—इदारा

तालीम है इस्लाम की – बस वंदना रहमान की
नाम हैं उसके अच्छे अच्छे – सज्दा हम हैं उसी को करते
कोई उसे प्रमेश्वर कहता – कोई उसे है ईश्वर कहता
नाम गॉड है कोई रखता – श्री अकाला कोई कहता
जो चाहो तुम नाम धरो – पर ऐबों से वह खाली हो
गैर को उसके पूजो ना – सबक़ यह सच्चा भूलो ना
उसने पयामी बहुत हैं भेजे – जिन को हम पैगम्बर कहते
रब का सब ने पता बताया – हुक्मे रब हम को पहुंचाया
सब के पीछे आए मुहम्मद – रब का संदेशा लाए मुहम्मद
वह तो हैं नबियों के खातम – सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
बादे खुदा वह सब से बरतर – और वह हैं मख़्लूक़ के अफ़्सर
लेकिन हैं अल्लाह के बन्दे – सज्दा उन को हम ना करते
उनके लिए हम रब से कहते – या रब उन पर रहमत कर दे
उन्होंने हम को दीन सिखाया – रब ही को माबूद बताया
गैर की पूजा शिर्क बताया – गैर को सज्दा शिर्क बताया
काबा जो है किब्लः हमारा – वह भी नहीं मस्जूद हमारा
सज्दा रब्बे काबा को – नहीं है सज्दा काबा को
बाप माँ की खिदमत करते – उन को भी सज्दा ना करते
उनको करते हम हैं सलाम – यह है दुआ़ए ख़ास व आम
अपने वतन पर जान हैं देते – सज्दा रब्बे वतन को करते
अर्ज़े वतन को मादर कहते – नहीं वंदना उसकी करते
बस वंदना रहमान की – तालीम है इस्लाम की
सरहद पर जब वक़्त पड़ा है – बुरी नज़र से अ़दू बढ़ा है
ले करके हम गन और भाले – रहे हमेशा आगे वाले
अपने वतन से प्यार है हमको – अहले वतन से प्यार है हमको
बहुत है प्यारा वतन हमारा – पर ईमां है सब से प्यारा
रब के सिवा माबूद नहीं है – मुस्लिम का ईमान यही है
जान देश पर करेंगे कुर्बा – पर ना देंगे हरगिज़ ईमां
खुदा हमारी मदद करेगा – अपनी रहमत हम पे करेगा

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلمــــاء
ص.ب. ۹۳/، تیغور مارغ،
لکناؤ-۲۲۶۰۰۷ یوبی (الھند)

Date ________ التاریخ ________

09/09/2018 ۲۸/ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौ0 मु0 वाज़ेह रशीद नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)

प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)

मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

शिमाल उत्तर को कहते हैं।
شمال اتّر کو کہتے ہیں۔
जुनूब दक्खिन को कहते हैं।
جنوب دکھن کو کہتے ہیں۔
मशरिक़ पूरब को कहते हैं।
مشرق پورب کو کہتے ہیں۔
मग़रिब पच्छिम को कहते हैं।
مغرب پچّھم کو کہتے ہیں۔
आफ़्ताब सूरज को कहते हैं।
آفتاب سورج کو کہتے ہیں۔
माहताब चांद को कहते हैं।
ماہتاب چاند کو کہتے ہیں۔
हिलाल पहली तारीख के चांद को कहते हैं।
ہلال پہلی تاریخ کے چاند کو کہتے ہیں۔
बद्रे क़ामिल चौदहवीं रात के चांद को कहते हैं।
بدرِ کامل چودہویں رات کے چاند کو کہتے ہیں۔
तुलूअ़े आफ़्ताब सूरज निकलने को कहते हैं।
طلوعِ آفتاب سورج نکلنے کو کہتے ہیں۔
गुरूबे आफ़्ताब सूरज डूबने को कहते हैं।
غروبِ آفتاب سورج ڈوبنے کو کہتے ہیں۔